May
2026

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

मज़हब-ए-इस्लाम
समग्र और संतुलित शिक्षाओं से युक्त

"आज हमारा काम यह है कि इस्लाम का ऐसा संतुलित, ऐसा समग्र विचार दुनिया की क़ौमों के सामने प्रस्तुत करें जिससे वह यह समझें कि इस्लाम ही उनका सही मार्गदर्शन कर सकता है। अगर अमरीका का इस्लाम से, नुबूवत-ए-मुहम्मदी (स0अ0व0) से, आसमानी शिक्षाओं से, इस्लामी मूल्यों से रिश्ता स्थापित हो जाए तो आज सारी दुनिया पर रहमतों के दरवाज़े खुल जाएं, आज दुनिया की क़िस्मत बदल जाए, तक़दीर बदल जाए, जंगों के बादल छट जाएं, दिलों से नफ़रत दूर हो जाएं, इन्सान इन्सान का शिकारी न रहे, इन्सान सिर्फ़ शैतान का दुश्मन और इन्सान का दोस्त बन जाए और यह काम इस्लाम ही कर सकता है।"

(नई दुनिया अमरीका में साफ़-साफ़ बातें: 62)

मुफ़क्किर-ए-इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

आलम-ए-इस्लाम की अहमियत और ज़िम्मेदारी

"बिला–शुब्हा इस वक़्त पूरा आलमे–इस्लाम और ख़ास तौर पर आलमे–अरब एक नाज़ुक और फ़ैसलाकुन (निर्णायक) दौर से गुजर रहा है। सच्ची बात यह है कि मुसलमानों के इतिहास का यह निहायत संगीन और हस्सास मरहला है। यह वह दौर है जिसकी मिसाल क़ौम–ओ–मिल्लत की तारीख़ में बहुत कम ही नज़र आती है। आज के इन हालात में आलमे–इस्लाम की सबसे बढ़कर यह ज़िम्मेदारी है कि वह इंसानियत की फलाह–ओ–बहबूद के लिए अपना फर्जे–मंसबी अदा करे। आलमी सियासत की बिसात में मरकज़ी किरदार निभाए। तारीख़ के धारे का रुख़ मोड़ दे और दुनिया की बाग़डोर जाहिली निज़ाम के बजाय इस्लाम के पाकीज़ा–ओ–आदिल और मुन्सिफ़ाना निज़ाम के सुपुर्द कर दे। हक़ीक़त में इस उम्मत का यही वह बुनियादी और सबसे बुलंद मक़सद है जिसके लिए अक़वामे–आलम के दरमियान इसको बरपा किया गया था।

याद रहे! इस अज़ीम मक़सद के लिए जोश के बजाय होश, दूर–अंदेशी, हज़्म–ओ–एहतियात, हिकमत और तदब्बुर की जरूरत है। इसके लिए जुर्रत–ओ–हिम्मत भी चाहिए मगर इसी के साथ ग़ौर–ओ–फ़िक्र और मन्सूबाबंदी भी जरूरी है। इसकी बेहतरीन मिसाल बाज़ और शेर के शिकार की है जो पूरी कूव्वत और समझदारी के साथ अपने शिकार पर हमलावर होते हैं।

याद रहे! इस अज़ीम मक़सद के लिए उम्मते–मुस्लिमा के अंदर ग़ैर–मामूली ईमानी और रूहानी स्प्रिट का होना भी नागुज़ीर है। इसी के साथ माद्दी और जंगी साज़–ओ–सामान से लैस होना और जदीद साइंसी वसाइल (नवीन वैज्ञानिक संसाधन) से फ़ायदा उठाना भी एक ज़रूरत की चीज है। इन तमाम चीजों के अलावा मुसलमानों की मुन्तशिर सफ़ों में इत्तिहाद–ओ–इत्तिफ़ाक़ पैदा करना भी लाज़मी है। वाक़्या यह है कि मुसलमानों के आपसी इन्तिशार ने बहुत से मौक़े पर आलमे–इस्लाम को सख़्त नुक़सान पहुँचाया है, जिसका नतीजा यह हुआ कि अक़्ल–ओ–फ़िक्र की इंक़लाबी यूरिशों, देव–क़ामत ईजादात–ओ–इख़्तराआत, तोप–ओ–तुफंग की ताक़त और हद से बढ़ी हुई माद्दी तहज़ीब की चकाचौंध के सामने इसको हज़ीमत से दोचार होना पड़ा।

इसमें शुब्हा नहीं कि दुनिया की भूगोल में आलमे–इस्लाम को बुलंद मक़ाम हासिल है और इक़्तिसादी लिहाज से दुनिया के दूसरे मुल्कों के मुक़ाबले में वह सबसे ज़्यादा मजबूत है, इसलिए कि वही क्रूड आयल के चश्मों का तन्हा मालिक है जिससे आज दुनिया की सिनअती (औधोगिक) जिंदगी का पहिया रवां–दवां है। इसके अलावा भी वहां ऐसे बहुत से ज़ख़ीरे और माद्दनियात (खनिज पदार्थ) का ख़ज़ाना है जो शायद अभी बरामद न हो सका हो। लेकिन वहां जरूरत ऐसे काम करने वाले लेागों की है जिनकी तालीम–ओ–तर्बियत इस्लामी मिज़ाज के मुताबिक़ हुई हो ताकि वह किसी भी तरह की बाहरी मदद के मोहताज न रहें।"

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद-अल-हसनी (रह०)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक : 05 | मई २०२६ ई० | वर्ष : 18

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

मुहम्मद हसन नदवी

सह सम्पादक

मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

अनुवादक

मुहम्मद सैफ़

इल्म-ए-नाफ़ेअ के हासिल करने की तालीम

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"अल्लाह तबारक व तआला से इल्म-ए-नाफ़ेअ की दुआ किया करो और अल्लाह तआला की पनाह मांगा करो ऐसे इल्म से जो नफ़ाबख़्श न हो।"

सुनन इब्ने माजा: 3975

E-Mail: markazulimam@gmail.com   www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

ग़फ़लत का अंजाम

हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद फूलपुरी (रह0)

मुद्दत हुई पास-ए-नज़ाकत किये हुए
आह-ओ-फ़ुग़ां से शोर-ए-क़यामत किये हुए
लो देखो आ गया न ज़बां पर किसी का नाम
मुद्दत से हम थे ज़ब्त-ओ-मुहब्बत किये हुए
अगला सा वह सुकून-ओ-मतानत कहां कि अब
शोरीदगी है बन्दा-ए-वहशत किये हुए
फिरता है फिर नज़र में किसी का ख़िराम-ए-नाज़
सामान-ए-मुन्तहाए क़यामत किये हुए
यह शौक़-ए-दीद है कि चला मैं अदद के घर
ख़ुद्दारी व ग़ुरूर से फ़ुरसत किये हुए
फिर दिल में है कि दीजिये जुर्रत का इम्तिहान
अंजाम को हवाला-ए-क़िस्मत किये हुए
वह दिल कि जलवा गाह-ए-सुरूर-ओ-निशात था
अब ग़म है उसको मदफ़न-ए-हसरत किये हुए
अब दिल में दीवाला नहीं कोई है कि हूं
अंदाज़ा-ए-ज़बूनी-ए-क़िस्मत किये हुए
बेगाना वार दर पे किसी के चला हूं फिर
सामान-ए-सद नहफ़तेन-ए-उलफ़त किये हुए
नाज़िर के होश-ओ-अक़्ल भला अब कहां दुरुस्त
है मस्त इसको बादा-ए-उलफ़त किये हुए

इस अंक में:

दुनिया के हालात और दानिशमंदों की ज़िम्मेदारियां.....3

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

फ़स्ख़ व तफ़रीक़ के मसाएल.....4

हज़रत मौलाना सैय्यद जाफ़र मसऊद हसनी नदवी (रह0)

तक़्वा क्या है?.....6

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इद्दत के एहकाम.....8

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हॉर्मुज जलडमरूमध्य.....10

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

तलबा-ए-दीन की ज़िम्मेदारी और तक़ाज़े.....12

मोहम्मद नज्मुद्दीन नदवी

आरम्भ से आज तक चली आ रही जद्दोजहद.....14

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

मेज़बान-ए-रसूल (स0अ0व0).....17

मुहम्मद मुसअब नदवी

सोशल मीडिया और व्यवहारिक चैलेंज.....19

मुहम्मद अरमग़ान बदायूनी नदवी

दुनिया के हालात और दानिशमंदों की ज़िम्मेदारियां

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अमेरिका के पहले लेजिस्लेटर ने जो बात कही थी आज वह हक़ीक़त बनकर सामने आ रही है। यहूदी अमेरिका में इतनी मज़बूत पकड़ के साथ हैं कि अमेरिकी उनके सामने घुटने टेकने पर मजबूर हैं। यहूदी जिस मुल्क में भी रहे उन्होंने उस मुल्क को तबाही के किनारे पहुँचा दिया। उनको अपनी अक़्ल और अपनी बरतरी (श्रेष्ठता) पर नाज़ है। यक़ीनन एक दौर ऐसा गुज़रा है कि कुरआन मजीद ने उनकी बरतरी का तज़किरा किया है लेकिन अपनी काली करतूतों से फिर उन्होंने अपने आप को वहाँ पहुँचा दिया कि कुरआन मजीद ने उनकी ज़िल्लत का तज़किरा किया और उनको अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहिक़ (अधिकारी) क़रार दिया।

मुख़्तलिफ़ मुल्कों ने उनसे पीछा छुड़ा कर फ़िलिस्तीन में कई जगह उन्हें आबाद किया और आज हाल यह है कि वह अच्छे–बुरे के मालिक बने हुए हैं। फ़िलिस्तीन को छिन्न–भिन्न किया गया, ग़ज़्ज़ा बर्बाद किया गया और अब ईरान और लेबनान सामने हैं और न जाने किस–किस की बारी है। अफ़सोस यह है कि अमेरिका इसका पुश्त–पनाह ही नहीं, इसके साथ खड़ा है। खुद अमेरिकी इसको पसंद नहीं करते और अंदर ही अंदर लावा पक रहा है।

काश कि दुनिया होश के नाख़ून ले और सोचे कि जो क़ौम नंग–ए–इंसानियत (मानवता कि दृष्टि से लज्जाजनक कार्य करने वाली) है और जिसने हमेशा दुनिया के लोगों को अपना गुलाम समझा और उनका यह अक़ीदा रहा कि वह दुनिया के आक़ा हैं और दुनिया उनकी ख़िदमतगुज़ारी के लिए पैदा की गई है। वह क़ौम किसकी हो सकती है और उसका साथ देने वाले अपने लिए गढ़ा खोद रहे हैं। आज नहीं तो कल उनकी बारी है।

वह क़ौम जिसमें न जाने कितने अम्बिया भेजे गए और उस पर अल्लाह ने कैसे–कैसे इनामात किये लेकिन उसने नबियों को क़त्ल किया और नेमतों की नाक़द्री की। आज वह दुनिया के लिए किसी नासूर से कम नहीं। जुल्म–ओ–सितम की हदें ख़त्म हो चुकीं। जो कुछ हुआ और हो रहा है वह तसव्वुर से बाहर है और अब पानी सर से ऊँचा हो चुका है और बहुत से मोहर–ब–लब (ख़ामोश) मुल्कों के क़ाइदीन (शासक) ने ज़बानें खोलना शुरू कर दी हैं। इसलिए कि अब नुक़सान की ज़द में सब हैं।

आदमी नहीं सोचता कि जो आग लगाई जा रही है कल वह उसके घर को जलाएगी। अगर उसको बुझाया न गया तो दुनिया कहाँ पहुँचेगी। पहले ही उपाय कर लिया जाए तो तूफ़ान का मुक़ाबला आसान होता है और अगर सोने वाला यह सोच कर सोता रहे कि अभी तो आग बहुत दूर है तो उसको बुझाने का वक़्त ख़त्म हो जाता है और सब तबाह हो जाता है।

इस वक़्त ज़रूरत है जुल्म के ख़िलाफ़ कमर–बस्ता होने की। ख़ास तौर पर वह लोग जो कुछ कर सकते हैं जिनके पास ताक़त और हुकूमत है। अफ़सोस है कि वही लोग इसके नशे में चूर होकर भूल जाते हैं कि कल वह भी किसी का निशाना बनाए जा सकते हैं।

मौजूदा हालात में ज़िम्मेदारी मुसलमानों की भी है और आलमी ताक़तों की भी। मुसलमानों को सही नमूना पेश करने की ज़रूरत है और दुनिया के लोगों को ठंडे दिल से सोचने की ज़रूरत है, वरना यह कश्मकश जो मुख़्तलिफ़ मुल्कों में ख़ूँ–रेज़ियों की शक्ल में जारी है, इसको बंद नहीं किया जा सकता और इसका नुक़सान सिर्फ़ मुसलमानों को ही नहीं होगा बल्कि पूरी दुनिया को इसके नुक़सान भुगतने पड़ेंगे। सच्चाई यह है कि आज दुनिया में बे–इत्मिनानी की आम कैफ़ियत पैदा होती जा रही है। जीने का मज़ा ख़त्म हो रहा है। इन हालात में ज़िम्मेदारी है एहसास रखने वालों की, इंसानियत का दर्द रखने वालों की, हक़ीक़तों पर ग़ौर करने वालों की, इतिहास से सबक़ लेने वालों और उससे रोशनी हासिल करने वालों की और हालात बता रहे हैं कि शायद यह चीज़ अभी अनक़ा (विलुप्त) नहीं हुई है।

हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का क़िस्सा

हज़रत मौलाना सैय्यद जाफ़र मसऊद हसनी नदवी (रह०)

सूरह–ए–यूसुफ़ में अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है:

إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيِصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لاَ يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ

"यक़ीनन जो भी तक़वा और सब्र इख़्तियार करता है तो अल्लाह बेहतर काम करने वालों के अज्र को बेकार नहीं करता।" (यूसुफ़: 90)

आयत से पता चला कि जो आदमी तक़वे की ज़िंदगी गुज़ारेगा और तक़वे की ज़िंदगी गुज़ारने में जब दुश्वारियाँ पेश आएँगी, मुश्किलें सामने खड़ी होंगी, परेशानियाँ दामनगीर होंगी, उस वक़्त सब्र से काम लेगा तो अल्लाह तआला अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने का अज्र ज़ाया नहीं करता।

इसी सूरह की एक दूसरी आयत में तक़वा और सब्र का नतीजा यह बताया गया:

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِـــي الْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

"और इस तरह यूसुफ़ को हमने मुल्क में इक़्तिदार अता किया कि वह जहाँ चाहें रहें, हम जिसको चाहते हैं अपनी रहमत से नवाज़ देते हैं और अच्छा काम करने वालों के अज्र को ज़ाया नहीं करते।"

(यूसुफ़: 56)

यह आयत भी हमें बताती है कि अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को ज़मीन यानी दुनिया में इक़्तिदार अता किया कि वह जहाँ चाहें रहें और वह जिसको भी चाहता है अपनी रहमतों से नवाज़ता है। हक़ीक़त में यह उसी सब्र का नतीजा है और उसी तक़वा की बरकत है।

हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का क़िस्सा एक ख़्वाब से शुरू होता है। वह ख़्वाब देखते हैं तो अपने वालिद (पिता) से जाकर कहते हैं कि:

يَا أَبَتِ إِنِّـي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ

"अब्बा जान! मैंने ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को देखा, देखता हूँ कि वह मुझे सज्दा कर रहे हैं।" (यूसुफ़: 4)

उनके वालिद ने उनसे कहा कि:

يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيـــدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ

"ऐ मेरे बेटे! अपना ख़्वाब अपने भाईयों को मत बताना, कहीं वह तुम्हारे लिए कोई चाल चलने लग जाएँ, बेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।" (यूसुफ़: 5)

मानो इस नसीहत में यह इशारा दिया गया कि भाई अपने भाई से जल सकता है। भाई अपने भाई से हसद कर सकता है। एक भाई दूसरे भाई के लिए दिल में कीना (ईर्ष्या) रख सकता है। अपने ही भाई के ख़िलाफ़ भाई मोर्चा बना सकता है। यह हमारी आँखें देख भी रही हैं यानी बाहरी मुख़ालिफ़त, बाहरी दुश्मनी के साथ–साथ इंसान को अपनों की दुश्मनी को भी झेलना, देखना और सहना पड़ता है।

यह क़िस्सा आगे बढ़ता है तो अपने भाईयों से यह बात छुपाने के बावजूद भूल से बयान कर देते हैं तो फिर कीना, हसद, जलन, दुश्मनी और मुख़ालिफ़त का सिलसिला शुरू होता है। फिर हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाई अपने वालिद से जाकर यह कहते हैं कि आप उनको हमारे साथ क्यों नहीं भेजते? यह भी हमारे साथ चलें तो खेलें, कूदें, तफ़रीह करें, घूमें–फिरें। आप उनको घर में क़ैद रखते हैं, लेकिन उनके वालिद जानते थे, भाईयों की तरफ़ से उनके वालिद हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के दिल में इत्मिनान नहीं था, लिहाज़ा उनको भाइयों के साथ भेजने के लिए तैयार नहीं होते थे।

एक मर्तबा बहुत इसरार के बाद हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) मजबूर होते हैं और हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को भाइयों के साथ भेज देते हैं। चूँकि हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटों से यह कहा था कि:

إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ

"तुम्हारे उसके ले जाने से मुझे ज़रूर रंज होगा और मुझे डर है कि कहीं उसे भेड़िया न खा जाए और तुम उससे बेख़बर रहो।" (यूसुफ़: 13)

इस तरह भाईयों को एक मौक़ा मिल जाता है, एक बहाना मिल जाता है। चुनाँचे लेकर जाते हैं और वहाँ मशवरा होता है कि इनसे कैसे छुटकारा पाया जाए? आख़िरकार मशवरे के बाद यह तय होता है कि उनको एक कुएँ में डाल दिया जाए, वह खुद ही मर जाएँगे।

चूँकि हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) ने जिस अंदेशे का इज़हार किया था कि कहीं भेड़िया न खा जाए, तो भाई वही बहाना बनाते हैं और उनकी क़मीज़ को किसी जानवर का ख़ून लगाकर रात को लेकर आते हैं कि: अब्बा जान! हमने यूसुफ़ को सामान के पास छोड़ दिया था, हम अपने काम से निकल गए। भेड़िया आया और भाई यूसुफ़ को खा कर चला गया और यह देखिए! उनकी क़मीज़ है जिस पर भाई का ख़ून लगा हुआ है।

चोर कोई न कोई निशान छोड़ कर जाता है तो उन्होंने भी निशान छोड़ दिया। निशान यह था कि भेड़िये ने भाई को खाया, दाँत मारे, गोश्त नोचा लेकिन क़मीज़ कहीं से फटी हुई नहीं थी, उस पर सिर्फ़ ख़ून के धब्बे थे। इसलिए हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) बात समझ गए कि यह उनको धोखा दिया जा रहा है। बेवकूफ़ बनाने की कोशिश की जा रही है और जो डर था कि यह भाई दुश्मनी निकालेंगे और उनको नुक़सान पहुँचाएँगे, वह डर हक़ीक़त बनकर सामने आ गया।

क़िस्सा और आगे बढ़ता है। सात–आठ साल का एक छोटा सा बच्चा है। एक वीरान और अँधेरे कुएँ में पड़ा हुआ है। जंगल और बियाबान है। वीरान इलाक़ा है। न कोई आ रहा है न कोई जा रहा है। लेकिन इंतिज़ाम तो अल्लाह तआला की तरफ़ से हो रहा है, उनके सब्र का इम्तिहान हो रहा है।

चुनाँचे ताजिरों (व्यापारी) का एक क़ाफ़िला आता है। कुआँ देखकर वह लोग पानी के लिए डोल डालते हैं। डोल में पानी के बजाय वह बच्चा निकलता है जो बेहद हसीन और ख़ूबसूरत था। ख़ूबसूरती में हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की मिसाल दी जाती है।

क़ाफ़िले वाले जिन्होंने डोल डाला था और डोल में पानी के बजाय बच्चा निकला था तो वह बहुत खुश हो गए। यह इतना ख़ूबसूरत, इतना सेहतमंद, चेहरे–मोहरे से इतना शरीफ़ नज़र आने वाला बच्चा किसी आला ख़ानदान का बच्चा नज़र आ रहा है। हमें इसके मुँह माँगे दाम मिलेंगे, क्योंकि उस ज़माने में बच्चे और गुलाम बेचे जाया करते थे।

तो क़ाफ़िले वालों ने सोचा कि यह तो बड़ा अच्छा कारोबार हो जाएगा, जो फ़ायदा हमें इस तिजारत (व्यापार) में होता वह तो यह एक बच्चा ही दे जाएगा। चुनाँचे क़ाफ़िले वाले हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को लेकर बाज़ार पहुँचते हैं। फिर बिकते–बिकते हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) अज़ीज़–ए–मिस्र के पास पहुँचते हैं। यह आज़माइश चल रही है, भाईयों की दुश्मनी हुई, कुएँ में डाला जाना।

ग़ौर कीजिए! जब उनको कुएँ में डाला गया होगा तो उस वक़्त उस बच्चे का क्या हाल हुआ होगा? लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिल में यह बात डाल दी थी कि एक वक़्त वह आएगा कि तुम इन भाईयों को बताओगे कि उन्होंने क्या किया था? गोया इस बात की बशारत दे दी गई कि इंशाअल्लाह तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

कामयाबी के दो सुतून (स्तम्भ)

मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

"जो किसी सही मक़सद के लिए कहीं अपनी जिंदगी का कोई हिस्सा, कोई मुद्दत ख़र्च करें, वह किसी राह के मुसाफ़िर हों और किसी कारवां के शरीक हों, उनके लिए सबसे बढ़कर कामयाबी की ज़मानत दो चीजें हैं जिनको अल्लाह तआला ने हजरत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की ज़बान से निकलवाया है और इंसानी नस्लों के लिए छोड़ा है: إِنَّهُ مَنْ يَّتَّقِ وَ يَصْبِرْ कि दो बातें करनी हैं, खुदा की शान के नामुनासिब चीजों से और मक़सद को नुक़सान पहुँचाने वाली चीजों से परहेज–ओ–एहतियात और मक़सद के हुसूल की राह में जो मुश्किलें पेश आएँ उनको बर्दाश्त करना। बस इसके बाद क्या मक़ाम–ओ–मर्तबा हासिल होता है, इसका तअल्लुक़ अल्लाह से है, हमसे नहीं।

तक़्वा क्या है ?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हराम और मुश्तबह (संदिग्ध) माल से बचने का मिज़ाज उसी वक़्त बनता है जब आदमी अपने दिल पर मेहनत करे। जब तक दिल क़ाबू में नहीं आता, उस वक़्त तक हालात भी क़ाबू में नहीं आते और जब दिल क़ाबू में आता है तो हालात भी क़ाबू में आते हैं। सारा फ़ैसला दिल से होता है। हदीस शरीफ़ में इसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है। आप (स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमायाः "अच्छी तरह सुन लो कि जिस्म में एक गोश्त का टुकड़ा है, अगर वह ठीक हो जाए तो पूरा जिस्म ठीक हो जाता है और अगर वह बिगड़ जाए तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है और वह दिल है।" (सहीह बुख़ारीः 52)

मैं अक्सर यह बात कहता हूँ कि दिल की हैसियत बादशाह की है और दिमाग़ की हैसियत वज़ीर–ए–आज़म की है। दिल हुक्म देता है और दिमाग़ उसको लागू करता है। यानि कि दिल मालिक है और दिमाग़ लागू कराने वाली ताक़त है। दिल जो हुक्म जारी करता है, दिमाग़ उसको लागू करने के उपाय करता है और असबाब (साधन) फ़राहम करता है। असल हैसियत दिल की है। आप (स0अ0व0) ने इसी लिए यह बात फ़रमाई कि अगर दिल ठीक हो जाए तो सब ठीक हो जाता है। फ़ैसले दिल ही करता है। आम बोलचाल में भी यह लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है कि "दिल चाहता है" और कभी "दिल नहीं चाहता" अब अगर किसी काम को करने का दिल चाहता है तो दिमाग़ उसके लिए असबाब फ़राहम करता है और अगर दिल नहीं चाहता तो दिमाग़ उसके ख़िलाफ़ दूसरा तरीक़ा इख़्तियार कर लेता है और दिल के मुताबिक़ काम करना शुरू कर देता है। हासिल यह कि असल फ़ैसला दिल का चलता है।

जिस्म में खून की पूरी सप्लाई भी दिल ही करता है। अगर वह अपनी सप्लाई बंद कर दे तो आदमी को हार्ट अटैक आ जाता है। गोया जिस्म ज़ाहिरी तौर पर भी दिल से जुड़ा हुआ है और अन्दरूनी तौर पर भी पूरी तरह दिल ही से जुड़ा हुआ है। दिल फ़ैसला करता है तो आदमी आँख खोल कर देखता है, उसका जी चाहता है बंद कर ले तो आँख बंद कर लेता है। हाथ–पाँव और दूसरे आज़ा (अंग) दिल की मंशा के मुताबिक़ ही काम करते हैं। इसीलिए दिल पर मेहनत करने की असल ज़रूरत है। अगर आदमी का दिल सही है तो सब सही है, वरना उसकी पूरी ज़िंदगी बिगड़ती चली जाती है।

तक़्वे का मिज़ाज पैदा करने के लिए और तक़्वे की ज़िंदगी इख़्तियार करने के लिए जो चीज़ सबसे बढ़कर सहयोगी है, वह दिल है और इसी पर मेहनत करने की ज़रूरत है। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) फ़रमाते थे कि दिल की मिसाल ज़मीन की है। जिस तरह ज़मीन पर खेती की जाती है, ठीक उसी तरह दिल पर भी खेती करनी पड़ती है। खेती करने के लिए पहले ज़मीन पर मेहनत करनी पड़ती है, हल चलाना पड़ता है, बंजर ज़मीन को खेती के क़ाबिल बनाना पड़ता है, ज़मीन को नरम करना पड़ता है और बीज डालने पड़ते हैं, तब वह ज़मीन खेती के लायक़ बनती है। इसी तरह अल्लाह तआला ने हमें दिल की जो ज़मीन दी है, उस पर भी हमें मेहनत करने की ज़रूरत है। उस पर खेती करने के लिए ज़मीन को नरम करना पड़ता है। अगर ज़मीन बंजर है तो उसको खेती के क़ाबिल बनाना पड़ता है। उसके बाद बीज डाला जाएगा, उसमें पानी दिया जाएगा। इसके बाद जब अंकुर निकल आएगा तो निराई की ज़रूरत होगी, जिसको "हशाइश–ए–शैतानिया" कहते हैं यानी वह घास जो किसी काम की नहीं होती, उसको भी निकालना पड़ेगा ताकि ज़मीन की ताक़त (एनर्जी) असल पौधे में मुन्तक़िल (ट्रांसफ़र) हो। इसी तरह दिल की ज़मीन पर भी मेहनत की ज़रूरत होती है।

दिल की ज़मीन पर जो मेहनत होती है, वह ज़िक्र और तरबियत से होती है। तरबियत के लिए ज़रूरी है कि आदमी अल्लाह के किसी नेक बंदे के पास रहे, उससे सीखे और उससे मालूम करे। कई बार आदमी अपनी ख़ामियों को नहीं जानता। वह बहुत से काम ग़लत करता है और उनको अच्छा समझता है। जबकि वह चीज़ें हक़ीक़त में सही नहीं होतीं। इसलिए एक ऐसे शख़्स की ज़रूरत होती है जो तरबियत करने वाला हो और वह इस्लाह कर सकता हो। इसीलिए यह बात कही जाती है कि अगर आदमी बिना इस्लाह के तरक़्क़ी करना चाहे और कामों में आगे बढ़ना चाहे तो यह उसके लिए पूरी तरह मुमकिन नहीं।

आदमी इल्म के मैदान में अगर आगे बढ़े तो उसमें भी मुअल्लिम (शिक्षक) की ज़रूरत पड़ती है। लेकिन उसके लिए तन्हा वह इल्म काफ़ी नहीं, जब तक उसके अंदर रौशनी पैदा न हो और उस रौशनी को पैदा करने के लिए

शर्त है कि आदमी का दिल हक़ीक़त में दिल बने।

दिल को दिल बनाने के लिए पहली शर्त अल्लाह का ज़िक्र है और दूसरी शर्त सोहबत–ए–अह्ल–ए–दिल (दिल वालों का साथ) है। हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर रायपुरी (रह0) फ़रमाते थे कि इस वक़्त दुनिया में जो कुछ भी इन्तिशार और बिगाड़ है, अगर उसकी वजहों पर ग़ौर किया जाए तो बुनियादी तौर पर उसके दो वजह हैं: इख़्लास नहीं और अख़्लाक़ नहीं।

इख़्लास और अख़्लाक़ दो ऐसी चीज़ें हैं जिनके न होने की वजह से पूरी दुनिया में एक इन्तिशार नज़र आता है। हज़रत रायपुरी (रह0) यह भी फ़रमाते थे कि इख़्लास और अख़्लाक़ को पैदा करने का ज़रिया यह है कि अल्लाह की मोहब्बत पैदा की जाए और अल्लाह की मोहब्बत को पैदा करने की शर्त यह है कि ज़िक्र की कसरत हो और अल्लाह वालों का साथ हो।

सच्ची बात यह है कि इस वक़्त समाज में जो झगड़े हैं, दीनी इदारों और कामों में जो झगड़े हैं, अगर ग़ौर किया जाए तो हक़ीक़त यह है कि उसकी एक बड़ी और बुनियादी वजह इख़्लास का न होना है। आदमी काम करता है तो अपने लिए और अपने नाम के लिए करता है, यहाँ तक कि अपने इदारे के लिए करता है। याद रखें! यह चीज़ें हरगिज़ मक़सूद नहीं हैं। अगर कोई आदमी महज़ अपने इदारे के लिए काम कर रहा है तो ज़ाहिर है वह अल्लाह के यहाँ मक़बूल नहीं है। जो काम अल्लाह की रज़ा के लिए किया जाए, अल्लाह के यहाँ वही काम मक़बूल होता है। इसलिए इख़्लास का होना बहुत ज़रूरी है और यह तभी पैदा होगा जब अल्लाह का ज़िक्र होगा और अहलुल्लाह की सोहबत हासिल होगी।

इख़्लास का असल महल दिल है। दिल से इख़्लास पैदा होता है। अगर आदमी के अंदर इख़्लास होगा तो अल्लाह के यहाँ उसके काम मक़बूल होंगे। कुरआन मजीद में आप (स0अ0व0) के बारे में यह बात कही गई कि: "कह दीजिए मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना, मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो जहानों का पालनहार है।"

ज़ाहिर है यह बात आप (स0अ0व0) की ज़बानी उम्मत को बताने के लिए कहलवाई गई ताकि पता चल सके कि बड़े से बड़े कामों में भी आमाल की क़बूलियत के लिए इख़्लास शर्त है। आदमी अल्लाह के लिए काम करेगा तो मक़बूल होगा, वरना मक़बूल नहीं होगा। इख़्लास से काम के अंदर ताक़त पैदा होती है और उसका असल महल दिल है। जब दिल पर मेहनत की जाएगी तो इख़्लास पैदा होगा, वरना नहीं और आदमी के अख़्लाक़ भी बुलंद नहीं होंगे।

अगर आदमी का दिल इख़्लास से भर जाए तो कोई झगड़ा ही बाक़ी नहीं रहता और न आदमी को अपनी बड़ाई पसंद होती है। वह यही सोचता है कि अगर अल्लाह राज़ी है तो सब ठीक है, वरना कुछ नहीं। सच्चाई यह है कि दीन के तमाम इदारे और मरकज़ जो हमें ज़ाहिरी तौर पर काम करने की जगहें नज़र आ रही हैं, यह सब असबाब व ज़राए (साधन) हैं और असल मक़सूद अल्लाह की ज़ात है। अल्लाह का दीन और उसकी दी हुई शरीअत है। आदमी जब अल्लाह के लिए काम करेगा तो वह काम मक़बूल होगा और सब झगड़े भी ख़त्म हो जाएँगे। आम तौर पर झगड़े पैदा होने की असल वजह आदमी की अपनी बड़ाई होती है कि फ़लाँ को यह चीज़ मिले और फ़लाँ को यह मंसब मिले।

कई बार यह भी होता है कि आदमी दीन की ख़ातिर किसी के मुक़ाबले पर आ जाता है। इसी लिए एक हदीस में यह बात भी फ़रमाई गई है कि अल्लाह के लिए मोहब्बत, अल्लाह के लिए नफ़रत, अल्लाह के लिए देना और अल्लाह के लिए लेना तकमील–ए–ईमान का रास्ता है। इसीलिए कभी–कभी किसी वजह से अल्लाह के लिए बुग्ज़ भी होता है और आदमी के अंदर यह बात पैदा होती है कि फलाँ आदमी ग़लत है, लेकिन यह बात अपने लिए पैदा नहीं होती बल्कि अल्लाह के दीन के लिए होती है।

मुशाजरात–ए–सहाबा (सहाबा (रज़ि0) के आपसी मतभेद) को अगर आप देखें तो उनमें ज़्यादातर हर एक की अपनी–अपनी राय थी। वह लोग अल्लाह के लिए लड़े। इसी तरह बाद के ज़माने में भी बाज़ बड़े लोगों में इस तरह के मतभेद हुए हैं और इसलिए हुए हैं कि उन्होंने एक बात सही समझी और यह महसूस किया कि अगर उस वक़्त इस बात की नकीर न की गई तो हालात मज़ीद बिगड़ेंगे और ख़तरा है कि कोई गुमराही आम न हो जाए। यह एक अलग मसला है और बहुत नाजुक बात है। वरना यह भी मुमकिन है कि आदमी ज़ाती झगड़ा करे और उस पर "अल्लाह के लिए" करने का उन्वान लगा दे।

इसलिए आम तौर से झगड़े दुनिया के लिए होते हैं और ओहदे और मंसब के लिए होते हैं। अल्लाह के यहाँ यह झगड़े ग़ैर–महमूद और सख़्त नापसंदीदा हैं। आदमी को ग़ौर करना चाहिए कि वह जो झगड़ा कर रहा है, वह अपने नफ़्स के लिए है या अल्लाह की रज़ा के लिए? अगर अल्लाह के लिए है तो वह महमूद है और अगर नफ़्स के लिए तो इंतिहाई नापसंद है। अल्लाह को जो चीज़ें सख़्त नापसंदीदा हैं, उनमें एक यह भी है।

इद्दत के एहकाम

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इद्दत के लुग़वी व शरई मानेः

इद्दत का लफ़्ज़ः

عَدَّ يَعُدُّ عَدًّا وَتَعْدَاداً وَعَدَّةً: حسبها وأحصاها

(यानी शुमार करने) से माख़ूज़ है, लिहाज़ा इसके लफ़्ज़ी मानी मात्रा और गिनती करने के हैं।" (अल–मुअजमुल वसीत, मुअजमुल ग़नी, अल–बहरुर राइक़ः ४/१२८)

और शरीअत की इस्तिलाह में इद्दत उस इंतज़ार को कहते हैं जो निकाह या शुब्हा–ए–निकाह के ज़ाइल होने पर औरत पर लाज़िम होता है। (अल–बहरः ४/१३८, हिंदियाः १/५२६)

इद्दत की मस्लहत और हिकमतः

शाह वलीउल्लाह देहलवी (रह0) ने इद्दत की तीन अहम मस्लहतें बयान फ़रमाई हैं:

१– पहली यह कि इसके गुज़ारने से बिल्कुल यक़ीनी तौर पर मालूम हो जाता है कि औरत का रहम (गर्भ) उसके नुत्फ़े (गर्भ/वीर्य) से ख़ाली है। इससे नसब के इख़्तिलात का ख़तरा दूर हो जाता है।

२– इद्दत से निकाह के मामले की अहमियत मालूम हो जाती है। इसीलिए निकाह करते वक़्त मजमा होना चाहिए और ख़त्म होते वक़्त लम्बी मुद्दत तक इंतज़ार होना चाहिए।

३– इद्दत से इसका पता चल जाता है कि वह उस निकाह को ख़त्म करने पर संजीदा है, उसने यह क़दम जल्दबाज़ी में नहीं उठाया है वग़ैरह–वग़ैरह। (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ाः २/२१६–२२०)

इद्दत के अहकामः

तलाक़ की इद्दत कब वाजिब होती है?

औरत पर तलाक़ की सूरत में इद्दत उसी वक़्त वाजिब होती है जब शौहर ने बीवी को ख़ास तअल्लुक़ के बाद या ख़लवत–ए–सहीहा (संभोग) के बाद तलाक़ दी हो। अगर ये दोनों चीज़ें न पाई गईं और शौहर ने तलाक़ दे दी तो औरत पर इद्दत वाजिब न होगी। चुनाँचे कुरआन मजीद में अल्लाह तआला का इरशाद हैः

يا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ

"ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम्हारे लिए उनके ज़िम्मे कोई इद्दत नहीं है जिसकी गिनती तुम्हें शुमार करनी पड़े, बस तुम उन्हें कुछ दे–दिला दो और अच्छी तरह रुख़्सत करो।" (अल–अहज़ाबः ४९)

और हाथ लगाने यानी सोहबत करने (संभोग) ही के हुक्म में वह सूरत भी है जब ख़लवत–ए–सहीहा (संभोग) के बाद तलाक़ दी हो, इसलिए कि हज़रत उमर (रज़ि0) और कई सहाबा किराम (रज़ि0) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमायाः

"जब शौहर दरवाज़ा बंद कर ले और पर्दा बराबर कर दे तो औरत के लिए महेर वाजिब हो जाएगा। उस पर इद्दत लाज़िम हो जाएगी और औरत को मीरास मिलेगी।" (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबाः ३/३५१, दार कुतनीः ३७७९, मुअत्ता, किताबुन्निकाह, बाब अरख़ाउस्सुतूरः १५०७, अल–बहरुर राइक़ः ४/१४०, हिदाया मअ–अल–फ़तहः ४/३०७, हिंदियाः १/५२६)

हाइज़ा ग़ैर हामिला की इद्दतः

जिस औरत को हैज़ आता हो, अगर वह हामिला नहीं है तो उसकी इद्दत तलाक़ तीन हैज़ है। इसीलिए अगर तुहर में तलाक़ दी गई तो उसके बाद जब तीन माहवारियाँ आ जाएँ तभी इद्दत ख़त्म होगी। इसलिए कि अल्लाह तआला का इरशाद हैः

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوَءٍ

"और मुतल्लक़ा औरतें अपने बारे में तीन दौर तक इंतज़ार करें।" (अल–बक़राः २२८)

और अगर हालत–ए–हैज़ में तलाक़ दी तो उस हैज़ का शुमार नहीं किया जाएगा।

तलाक़ की इद्दत तलाक़ देते ही शुरू हो जाती है। अगर औरत को देर से तलाक़ की ख़बर मिले तो तलाक़ के वक़्त से ही इद्दत की शुरुआत मानी जाएगी। (हिंदियाः १/५२६)

यहाँ तक कि अगर तलाक़ के वक़्त से तीनों हैज़ गुज़रने के बाद ख़बर मिले तो इद्दत ख़त्म मानी जाएगी। (हिंदियाः १/५२६–५२७)

ग़ैर हाइज़ा ग़ैर हामिला की इद्दतः

अगर किसी औरत का हैज़ उम्र ज़्यादा होने की वजह से बंद हो गया, या अभी उसको हैज़ आना शुरू नहीं हुआ और शौहर ने उसको तलाक़ दे दी तो उसकी इद्दत–ए–तलाक़ तीन महीने होगी। अगर शौहर ने चाँद के महीने की पहली तारीख़ को दी हो तो यह महीने चाहे उन्तीस दिन के हों या तीस दिन के, पूरे तीन महीने इद्दत गुज़ारेगी। चाहे दिन के शुरूआती हिस्से में तलाक़ दी हो या अस्र के बाद सूरज डूबने से पहले दी हो और अगर महीने की किसी बीच की तारीख़ को तलाक़ दी हो तो अब वह इद्दत दिन के हिसाब से गुज़ारेगी यानी हर महीने को तीस दिन का शुमार करके पूरे नब्बे दिन इद्दत गुज़ारेगी। इस इद्दत का ज़िक्र कुरआन मजीद में सराहत से आया है। चुनान्चे अल्लाह तआला का इरशाद हैः "और तुम्हारी जो औरतें हैज़ से मायूस हो चुकी हों, अगर तुम्हें शक हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और (यही इद्दत) उन औरतों की भी है जिनको हैज़ आया ही नहीं।" (हिन्दियाः 1/527, हिदाया मअ–अल–फ़तेहः 4/309)

हामिला औरत की इद्दतः

अगर औरत को शौहर ने तलाक़ दी और वह औरत तलाक़ के वक़्त हमल की हालत में थी तो उसकी इद्दत वज़अ–ए–हम्ल (यानी बच्चे की पैदाइश) है, ख़्वाह बच्चे की पैदाइश जल्दी हो जाए या उसमें आठ–नौ महीने लग जाएँ। इसलिए कि अल्लाह तआला ने हामिला की इद्दत बताते हुए सराहत से इरशाद फ़रमायाः

وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ

"और जो हामिला औरतें हैं उनकी इद्दत यह है कि उनको वज़्अ–ए–हम्ल हो जाए।"

(अत्तलाक़ः ४) (देखिएः शामीः ३/५७, हिदाया मअ–अल फ़तहः ४/३१२)

अगर किसी औरत के एक बच्चे की पैदाइश के छह महीने से पहले दूसरा बच्चा पैदा हुआ तो उसको जुड़वाँ माना जाएगा और दूसरे बच्चे की पैदाइश के बाद ही इद्दत ख़त्म होगी।

(हिंदियाः १/५२६, फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँः १/३४७)

जब वक़्त से पहले बच्चा पैदा हो जाएः

अगर किसी हामिला को तलाक़ दी गई, ज़ाहिर है कि उसकी इद्दत वज़अ–ए–हमल थी जैसा कि ऊपर बताया गया, लेकिन वह हमल एक–दो माह ही का था और बच्चे के आज़ा (अंग) में से अभी कुछ बना नहीं था कि वह साक़ित (ख़राब) हो गया या उसका इस्क़ात करा (बरक़रार न रखना) दिया गया, तो उससे इद्दत पूरी नहीं होगी, बल्कि उसके बाद जो ख़ून जारी हुआ उसको एक हैज़ माना जाएगा, फिर उसके बाद जब मजीद दो हैज़ आ जाएँ तब इद्दत पूरी होगी।

लेकिन अगर बच्चे के कुछ आज़ा बन चुके हैं, मसलनः उंगली, या हाथ, या पैर, या नाख़ून, या बाल, तो उसके साक़ित होने या उसका इस्क़ात कराने से इद्दत पूरी हो जाएगी, इसलिए कि हुक्मन यह बच्चा ही है। चार महीने मुकम्मल होने पर आज़ा की तख़्लीक़ हो जाती है। अल्लामा शामी ने लिखा है कि इससे पहले भी बाज़ आज़ा (अंग) बन सकते हैं, लिहाज़ा चार माह गुज़रने पर इद्दत पूरी हो जाएगी। इससे पहले ढाई–तीन महीने हुए हों तो देखना पड़ेगा कि बाज़ आज़ा बने हैं या नहीं?! (शामीः ३/५११)

ग़ैर हामिला औरत की इद्दत–ए–वफ़ातः

अगर किसी औरत का शौहर ख़त्म हो जाए और वह हामिला न हो तो कुरआन मजीद में सराहत से आया है कि उसकी इद्दत चार महीने दस दिन होगी, चाहे शौहर ने उससे दुख़ूल (संभोग) किया हो या न किया हो। (शेषः पेज 18 पर)

हॉर्मुज जलडमरूमध्य

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

हॉर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया की उन चुनिंदा भौगोलिक समुद्री मार्गों में से एक है जो देखने में एक साधारण समुद्री रास्ता लगता है, लेकिन वास्तव में यह वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सैन्य रणनीति के जटिल जाल का केंद्र है। आमतौर पर इसे केवल तेल की आपूर्ति के संदर्भ में जाना जाता है, लेकिन इससे जुड़ी कई ऐसी वास्तविकताएँ भी हैं जो सामान्य दृष्टि से छिपी रहती हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों, विशेष रूप से मध्य पूर्व की तनावपूर्ण स्थिति, महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा और ऊर्जा राजनीति के संदर्भ में इन छिपे हुए पहलुओं को समझना अत्यंत आवश्यक है।

अक्सर लोग हॉर्मुज जलडमरूमध्य को केवल एक व्यापारिक मार्ग समझते हैं, लेकिन वास्तव में यह वैश्विक शक्ति संतुलन का एक महत्वपूर्ण साधन है। इस पर नियंत्रण या प्रभाव रखने का अर्थ है वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त करना। यही कारण है कि बड़ी शक्तियाँ, विशेष रूप से अमेरिका, चीन और यूरोपीय देश, इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

एक कम ज्ञात तथ्य यह भी है कि इस जलडमरूमध्य का महत्व केवल तेल तक सीमित नहीं है, बल्कि प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम उत्पाद और अन्य व्यापारिक सामान भी बड़ी मात्रा में इसी मार्ग से गुज़रते हैं। इसके अलावा यह समुद्री संचार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के लिए भी एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

हॉर्मुज जलडमरूमध्य की सबसे बड़ी विशेषता इसकी संकीर्णता है। यद्यपि इसकी कुल चौड़ाई लगभग 33 किलोमीटर है, लेकिन जहाजों के गुजरने के लिए निर्धारित मार्ग केवल कुछ किलोमीटर चौड़े हैं। यह संकीर्णता इसे एक "चोक पॉइंट" यानी "तंग मार्ग" बनाती है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण लेकिन कम चर्चा किया जाने वाला तथ्य यह है कि इस संकीर्णता के कारण किसी भी छोटे स्तर की सैन्य कार्रवाई भी बड़े प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। उदाहरण के लिए, कुछ बारूदी सुरंगें, सीमित मिसाइल हमले या कुछ नौकाओं की गतिविधि भी वैश्विक स्तर पर भय पैदा कर सकती है और तेल की कीमतों में तुरंत वृद्धि कर सकती है।

वर्तमान परिस्थितियों में हॉर्मुज जलडमरूमध्य में खुले युद्ध की तुलना में "मूक युद्ध" अधिक देखने को मिलता है। इसमें साइबर हमले, ड्रोन निगरानी, नौसैनिक अभ्यास और सीमित झड़पें शामिल हैं। यह सभी गतिविधियाँ एक–दूसरे पर दबाव डालने के लिए की जाती हैं, बिना पूर्ण युद्ध के। कई बार केवल बयान और धमकियाँ ही वैश्विक बाजारों को प्रभावित कर देती हैं।

आम तौर पर यह कहा जाता है कि दुनिया का लगभग 20 प्रतिशत तेल हॉर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरता है, लेकिन इसके अलावा भी कई उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से इस पर निर्भर हैं, जैसे शिपिंग उद्योग, बीमा कंपनियाँ और वैश्विक वित्तीय बाजार। यदि यहाँ तनाव बढ़ता है तो बीमा दरों में तुरंत वृद्धि हो जाती है, जिससे शिपिंग लागत बढ़ जाती है। इसका प्रभाव केवल तेल पर नहीं बल्कि सामान्य वस्तुओं की कीमतों पर भी पड़ता है।

बहुत से लोग मानते हैं कि पाइपलाइन और वैकल्पिक बंदरगाह इस जलडमरूमध्य का पूर्ण विकल्प बन सकते हैं, लेकिन वास्तविकता इससे भिन्न है। यद्यपि सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ने कुछ वैकल्पिक मार्ग विकसित किए हैं, लेकिन उनकी क्षमता सीमित है।

यह एक महत्वपूर्ण लेकिन कम कही जाने वाली बात है कि वर्तमान वैश्विक ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हॉर्मुज जलडमरूमध्य का कोई पूर्ण विकल्प मौजूद नहीं है। इसका अर्थ है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था अब भी इस एक संकीर्ण मार्ग पर काफी हद तक निर्भर है।

हॉर्मुज जलडमरूमध्य के संदर्भ में चर्चाएँ अक्सर राजनीति और अर्थव्यवस्था तक सीमित रहती हैं, लेकिन पर्यावरणीय ख़तरे भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। तेल टैंकरों की बड़ी संख्या, संभावित दुर्घटनाएँ और सैन्य गतिविधियाँ समुद्री पर्यावरण के लिए ख़तरा बन सकती हैं। यदि किसी बड़े टैंकर से तेल रिसाव हो जाए तो इसके प्रभाव स्थानीय समुद्री जीवन के साथ–साथ वैश्विक पर्यावरण पर भी पड़ सकते हैं।

इस जलडमरूमध्य के आसपास के देशों के संबंध हमेशा सरल नहीं होते। बाहरी रूप से विरोध के बावजूद, कभी–कभी गुप्त सहयोग भी देखने को मिलता है। इसी तरह बड़ी शक्तियाँ एक ओर तनाव बढ़ाती हैं, तो दूसरी ओर पर्दे के पीछे बातचीत के माध्यम से उसे नियंत्रित करने की कोशिश करती हैं। यह पेचीदा संबंध इस बात की ओर इशारा करते हैं कि हॉर्मुज जलडमरूमध्य केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं बल्कि एक ऐसा स्टेज है जहां अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के कई किरदार एक ही समय में विभिन्न भूमिकाएं अदा कर रहे होते हैं।

वर्तमान समय में हॉर्मुज जलडमरूमध्य एक संवेदनशील दौर से गुजर रहा है। एक ओर ईरान और पश्चिमी देशों के बीच तनाव है, तो दूसरी ओर वैश्विक अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाए रखने की आवश्यकता भी है। सभी पक्ष जानते हैं कि इस मार्ग के बंद होने से पूरी दुनिया प्रभावित होगी, इसलिए तनाव के बावजूद एक अनकही सीमा बनाए रखी जाती है।

दुनिया धीरे–धीरे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे बिजली, सौर और पवन ऊर्जा की ओर बढ़ रही है। इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या भविष्य में हॉर्मुज जलडमरूमध्य का महत्व कम हो जाएगा?

इसका उत्तर पूरी तरह "हाँ" नहीं है। यद्यपि वैकल्पिक ऊर्जा का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन तेल और गैस की मांग अभी भी बहुत अधिक है, विशेष रूप से विकासशील देशों में। इसलिए लंबे समय तक इसकी महत्ता बनी रहने की संभावना है।

हालांकि ऊर्जा परिवर्तन के साथ इसकी राजनीतिक भूमिका का स्वरूप बदल सकता है। भविष्य में यह केवल तेल ही नहीं बल्कि अन्य संसाधनों और व्यापारिक मार्गों के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण बना रह सकता है।

हॉर्मुज जलडमरूमध्य एक ऐसा भौगोलिक स्थान है जिसकी महत्ता को केवल उसके बाहरी रूप से नहीं समझा जा सकता। इसके पीछे कई ऐसी वास्तविकताएँ छिपी हैं जो वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सैन्य रणनीति को प्रभावित करती हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में यह समुद्री मार्ग एक नाजुक संतुलन का प्रतीक है, जहाँ तनाव और सहयोग दोनों एक साथ मौजूद हैं। इसके बारे में कम ज्ञात तथ्यों को समझना न केवल शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वैश्विक परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझने के लिए भी आवश्यक है।

यह कहा जा सकता है कि जब तक दुनिया ऊर्जा के वर्तमान स्रोतों पर निर्भर रहेगी, तब तक हॉर्मुज जलडमरूमध्य की महत्ता बनी रहेगी और इसके इर्द–गिर्द घूमने वाली राजनीति, अर्थव्यवस्था और शक्ति की प्रतिस्पर्धा भी जारी रहेगी।

तलबा-ए-दीन की ज़िम्मेदारी और तक़ाज़े

मोहम्मद नज्मुद्दीन नदवी

मदारिस–ए–इस्लामिया और मकातिब–ए–दीनिया इस ज़माना में दीन–ओ–मिल्लत के बाहरी दीवार और उम्मत–ए–मुस्लिमा के लिए पावर हाउस की हैसियत रखाते हैं। मदारिस–ए–इस्लामिया व मुआहिद–ए–अरबिया की अहमियत किसी से ढकी छुपी नहीं है। अपने क्या 'ग़ैरों के नज़दीक भी इन मदारिस की अहमियत, ज़रूरत और इफ़ादियत व किरदार मुस्लिम है, इसीलिए ये दुश्मनान–ए–इस्लाम और अग़्यार के निशाने पर हमेशा रहते हैं। यह मदारिस जिस क़दर मज़बूत और मुस्तहकम होंगे 'उसी क़दर उम्मत–ए–मुस्लिमा को तक़वियत पहुँचाते रहेंगे। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि उम्मत की क़यादत व इमामत, तालीम व तरबियत और इस्लाह व दावत नीज़ दीन–ए–हक़ की तश्हीर व तब्लीग़ और इस के अहकाम व मुतालबात की तामील व तब्लीग़ के सिलसिला में मदारिस का किरदार अहम रहा है और मौजूदा दौर में भी है और आने वाले दौर में भी रहेगा। यही वजह है कि आज के इस गए गुज़रे दौर और नागुफ़्ता बिही हालात में भी अहल–ए–ईमान की निगाहें मदारिस–ए–इस्लामिया की तरफ़ उठती हैं और उन का इन मदारिस से तवक़्क़ो रखना ऐन फ़ितरी है।

उलमा–ए–इस्लाम और तलबा–ए–दीन उम्मत–ए–मुस्लिमा के क़ल्ब व दिल हैं, हदीस शरीफ़ में क़ल्ब का ये हाल बताया गया है कि:

ألا وإن في الجسد مضغة، إذا صلحت صلح الجسد كله
وإذا فسدت فسد الجسد كله، ألا وهي القلب

"जिस्म–ए–इन्सानी में गोश्त का एक टुकड़ा मौजूद है, अगर वो ठीक है तो सारा जिस्म ठीक होगा और अगर वो ठीक नहीं है तो जिस्म की ख़ैरियत नहीं यानी जिस्म का सारा निज़ाम बिगड़ जाएगा, हाँ सुनो! वो क़ल्ब है।" (सहीह अल–बुख़ारी व मुस्लिम)

उलमा और तलबा–ए–दीन अगर उम्मत का क़ल्ब हैं और यक़ीनन क़ल्ब हैं तो उलमा व तलबा में फ़साद हो तो उम्मत में फ़साद तबक़ा–ए–क़ल्ब से बढ़ कर होगा और अगर इन में ख़ैर व भलाई और सलाह है तो उम्मत में सलाह होगा और फ़साद से भी हिफ़ाज़त होगी। बुख़ारी की एक मशहूर रिवायत है जिसमें हुज़ूर (स0अ0व0) ने फ़रमाना चाहा है कि उम्मत में दो तबक़े हैं: एक आला तबक़ा है और दूसरा अदना तबक़ा। ये दोनों तबक़े हर मैदान में रहेंगे, एक आला तबक़ा होगा और दूसरा अदना तबक़ा होगा तो इल्म वाला तबक़ा भी आला तबक़ा है, इसकी ज़िम्मेदारी है कि इस तबक़े में किसी तरह का फ़साद और बिगाड़ न आए।

इमाम बग़वी (रह0) अपने ज़माना के बहुत बड़े आलिम व मुहद्दिस और मुफ़स्सिर थे, उन्हें मुहियुस्सुन्नह कहा जाता है, उन्होंने कहा है कि उलूम–ए–शरिया के दो अक़साम हैं; (1) इल्मुल उसूल (2) इल्मुल फ़ुरूअ

इल्मुल उसूल का मतलब यह है कि अल्लाह की ज़ात व औसाफ़ और अंबिया व रुसुल की तस्दीक़ का इल्म और यह हर होशमंद और बालिग़ इन्सान पर फ़र्ज़–ए–ऐन है, क़ुरआन में पचासों नहीं 'सैकड़ों आयतें इस इल्म की निस्बत मौजूद हैं और दूसरा इल्मुल फ़रूअ है जिसे अहकाम–ए–दीन व शरीयत का इल्म कहा जाता है। इस इल्म की दो क़िस्में उलमा ने बयान की हैं: एक फ़र्ज़–ए–ऐन है और दूसरा फ़र्ज़–ए–किफ़ाया। फ़र्ज़–ए–ऐन वाले इल्म का हुसूल लाज़िम व ज़रूरी है। फ़र्ज़–ए–किफ़ाया यह है कि एक शख़्स इतना इल्म हासिल करे कि वो साहिब–ए–फ़तवा व राशिद–फ़िल–इल्म हो जाए और अवाम व कम दर्जा के ख़्वास भी इस की तरफ़ रुजू करें, इस का सुबूत इस आयत से मिलता है कि:

فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

"अगर तुम को हक़ीक़त मालूम नहीं तो अहल–ए–इल्म से मालूम करो।" (अन्नहल: 43)

अल्लामा इब्न आबिदीन शामी (रह0) ने लिखा है कि

इस में अदना दर्जा का शुब्हा भी नहीं कि आदमी के लिए इस्लाम के अरकान का सीखना ज़रूरी है। इस का आसान मफ़हूम ये है कि उसूल–ए–दीन सीखने के बाद वज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़, रोज़ा के अहकाम व मसाइल और मालदार पर ज़कात के अहकाम और साहिब–ए–हैसियत पर हज के अहकाम व मसाइल का सीखना लाज़िम और ज़रूरी है अगर नहीं सीखेगा तो गुनहगार होगा और इख़्लास का सीखना भी उसी तरह ज़रूरी है, क्योंकि आमाल की सेहत व दुरुस्ती का मदार इख़्लास पर है और हलाल व हराम का जानना भी लाज़िम व फ़र्ज़ है, इसी तरह से ख़रीद व फ़रोख़्त के मसाइल और निकाह व तलाक़ के मसाइल व अहकाम का सीखना और इन मसाइल का जानना ज़रूरी है। इस इल्म को इस्तलाह में "फ़र्ज़–ए–ऐन" कहते हैं, इस इल्म के हुसूल के लिए किसी मदरसा में बाक़ायदा दाख़िला की ज़रूरत है और न अपना पूरा वक़्त इसके लिए फ़ारिग़ करने की ज़रूरत है बल्कि उलमा की सोहबत में रह कर इतना इल्म हासिल कर सकता है और पढ़े लिखे लोगों के लिए किसी भी आलिम–ए–दीन से "तालीमुल इस्लाम" और "बहिश्ती ज़ेवर" जैसी किताब पढ़ ले तो फ़र्ज़ इल्म उसे हासिल हो जाएगा। इसी इल्म की बाबत अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया:

طلب العلم فريضــة على كل مســلم، وفي رواية ضعيفة: ومسلمة۔

इस इल्म को हासिल करने वाला और इस पर इक्तिफ़ा करने वाला अहादीस–ए–फ़ज़ाइल–ए–इल्म व अहल–ए–इल्म के ज़ुमरे में नहीं आता और ऐसे को आलिम–ए–दीन भी नहीं कहा जाएगा।

इस के बर–ख़िलाफ़ एक क़िस्म इल्म की फ़र्ज़–ए–किफ़ाया की है और इस इल्म को हासिल करने वाला आलिम–ए–दीन कहलाता है और वो इन तमाम फ़ज़ाइल व मनाक़िब का मुस्तहिक़ है जिनका ज़िक्र ऊपर हमने किया था और आलिम–ए–दीन वो है जो इस फ़र्ज़ इल्म की जुज़ियात व तफ़्सीलात और उनके दलाइल और बराहीन और नुसूस व मुतून पर हावी हो और ऐसे मसलों का जवाब दे सके जो नादिरुल वजूद हों और कभी–कभी पेश आते हों और जो मुसलमानों में बल्कि इस से आगे बढ़ कर ग़ैर मुस्लिमों में भी बसीरत व हिकमत के साथ तहरीरन और तक़रीरन दीन की दावत व तब्लीग़ और इस की इशाअत की बिल–फ़ेल और बिल–कुव्वत सलाहियत व इस्तिदाद रखता हो जिसे उलूम–ए–ज़ाहिरा और उलूम–ए–बातिना दोनों में कमाल हासिल हो और बसीरत व मारिफ़त के साथ खुद भी अमल करता हो और इबादत करता हो और दूसरों को गुफ़्तार व किरदार और क़ौल व फ़ेल से इस इबादत की दावत देता हो, ऐसा आलिम इस्तिलाह में आलिम–ए–दीन कहा जाता है और इस क़दर इल्म हासिल करना फ़र्ज़–ए–किफ़ाया है। ऐसा इल्म हर शख़्स पर फ़र्ज़ नहीं। अगर किसी इलाक़ा के इतने अफ़राद इस इल्म को हासिल कर लें जिन से आम अहल–ए–ईमान व इस्लाम की अमली ज़रूरत पूरी होती हो तो उस इलाक़ा के लिए वो काफ़ी है, इल्म के इस दर्जा को फ़र्ज़–ए–किफ़ाया कहते हैं और याद रखिए कि फ़र्ज़–ए–ऐन यानी ज़रूरी इल्म के सिलसिला और इस की बक़ा का मदार भी इसी क़दर इल्म वाले उलमा के साथ वाबस्ता है। कुरआन में अल्लाह तआला का इरशाद है:

فَلَوْلاَ نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُــــواْ فِي الدِّيْنِ وَلِيُنذِرُواْ قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُواْ إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ

"और ये तो नहीं कि मुसलमान सब ही निकल खड़े हों तो क्यों न हर तबक़ा में से एक जमाअत निकल पड़े ताकि वो दीन में समझ पैदा करे और ताकि अपनी क़ौम को जब उन के पास वो वापस आए तो ख़बरदार करे शायद वो बाज़ रहें।" (अल–तौबा: 122)

अहल–ए–इल्म की मिसाल रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने कुएं से नहीं बल्कि बारिश से दी है। बारिश बुलाने वाले पर भी बरसती है और न बुलाने वाले पर भी बरसती है। बारिश अपनों पर भी बरसती है और ग़ैरों पर भी बरसती है। बारिश बंजर ज़मीन पर भी बरसती है और अच्छी ज़मीन पर भी बरसती है लेकिन इसके साथ ये भी याद रखिये कि बारिश मुफ़ीद भी होती है और मुज़िर भी। हमें मुफ़ीद व नाफ़े बारिश की मिसाल बन कर मदारिस की चहार दीवारी से तैयार होकर जाना चाहिए। इसके लिए ज़रूरी है कि कम हिम्मती को तर्क किया जाए। काहिली और सुस्ती को पास भटकने न दिया जाए। कसल–मंदी बहुत बड़ी बीमारी और जान लेवा मर्ज़ है, आज इल्म के वसाइल व अस्बाब बहुत हैं, मगर पस्त हिम्मती और कसल ने जज़्बों की अंगीठी को सर्द होने दिया।

आरम्भ से आज तक चली आ रही जद्दोजहद

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

"यह मुल्क मुसलमानों का नहीं, मुसलमानों को यहाँ से निकाल बाहर करो, यह मुल्क के गद्दार हैं, अगर मुसलमानों को इस मुल्क में रहना है तो यहाँ के कल्चर में उनको ज़म होना होगा, अपनी इस्लामी पहचान छोड़नी होगी, अपनी रोशन तहज़ीब से दस्तबरदार होना होगा, अपने खूबसूरत और ताबनाक माज़ी से ताल्लुक ख़त्म करना होगा। अगर उन्होंने ऐसा किया तो ठीक वरना हम इनको मसल देंगे, इस मुल्क से बेइज़्ज़त करके निकाल बाहर करेंगे। इनके दीनी कामों की अदायगी से इनको रोक देंगे। अज़ानों पर रोक लगा देंगे। मस्जिदों को मिस्मार कर देंगे। नौजवानों को पाबंद–ए–सलासिल कर देंग। इनके घरों को मलबे में तब्दील कर देंगे।"

यह धमकियाँ आए दिन मुसलमानों को दी जाती हैं, पहले दबे लहजे में दी जाती थीं, अब ऐलानिया दी जाती हैं। पहले कुछ सरफिरे ऐसी ज़बान इस्तेमाल करते थे, अब इक्तिदार की कुर्सी पर बैठने वाले और कानून के रखवाले यही ज़बान इस्तेमाल कर रहे हैं।

धमकियों की यह ज़बान हर ज़माने में और हर दौर में इस्लाम के मानने वालों को सुनना पड़ी है, लेकिन अंजाम–ए–कार मुसलमानों के हक में बेहतर रहा। हर दौर के सरफिरे, अक्ल से मावरा और तकब्बुर में मुब्तला अफ़राद ने अपने दौर के पैग़म्बरों के सामने और उनके मानने वालों के सामने यही लहजा इख्तियार किया, कुरान–ए–करीम इसकी मंज़रकशी करता है:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُواْ لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِيْنَ*وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الأَرْضَ مِن بَعْدِهِمْ ذَلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ*وَاسْتَفْتَحُواْ وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ

"और इनकार करने वालों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें अपने मुल्क से निकाल कर रहेंगे, या तो तुम हमारी ही मिल्लत में वापस आ जाओ, तो उनके रब ने उनको वही भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक करके रहेंगे और उनके बाद मुल्क में यकीनन हम तुम ही को बसाएंगे। यह उसको मिलता है जो मेरे सामने खड़े होने से डरता हो और मेरी वईद से डरता हो और उन्होंने फैसला चाहा और (नतीजा यह हुआ कि) हर सरकश ज़िद्दी ने मुँह की खाई।" (सूरह इब्राहीमः 13–15)

जो नहीं मानने वाले थे, ज़िद्दी थे, हटधर्मी थे, मुनकिर थे, उन्होंने अपने पैग़म्बरों से कहा थाः हम तुम्हें अपने मुल्क से निकाल बाहर करेंगे, या तुम्हें हमारे मज़हब में वापस आना पड़ेगा, हमारी तहज़ीब को कबूल करना पड़ेगा, हमारी रवायात को मानना पड़ेगा, हमारे तौर–तरीकों को अपनाना पड़ेगा।

खुदावन्द–ए–कुद्दूस ने अपने बंदों को यह पैग़ाम दिया कि हम इन ज़ालिमों को तबाह–ओ–बर्बाद कर देंगे फिर उसके बाद मुल्क तुम को सौंप देंगे, तुम को बसा देंगे, यह खुशख़बरी उन लोगों के लिए है जिनको इस बात का खौफ है कि कल उनको हमारे हुजूर हाज़िर होना है, जवाबदेह होना है, जिनको हमारे अज़ाब का डर है।

ऐसा लगता है कि यह आयत अभी नाज़िल हुई है और इसमें जो तस्वीरकशी की गई है वह मौजूदा बैनुल–अकवामी और मुल्की (राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय) हालात की की गई है। कहने वाले ज़िद्दी, हटधर्मी, कहने वाले औबाश, कहने वाले कातिल और मुजरिम यूँ कह रहे हैं अमन–ओ–सलामती के अलमबरदारों से, अखलाक–ओ–इंसानियत के महशर–बरदारों से {لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا} तुम्हारे पास दो ऑप्शन हैं: या तो हमारी देवमालाई तहज़ीब कबूल करो, हमारे कल्चर में ज़म हो जाओ, या फिर इस मुल्क को छोड़ दो और यहाँ से चले जाओ, अल्लाह तआला सात आसमान की बुलंदी

से कह रहा है कि इन ज़ालिमों को हम तबाह–ओ–बर्बाद करेंगे और उनके बाद तुम को इस ज़मीन में बसाएंगे।

इस वक्त मुल्क का अदलिया, मुल्क का बरसर–ए–इक्तिदार तबक़ा मुस्लिम दुश्मनी में एक दूसरे से बाजी ले जाने की कोशिश में है, नफ़रत इस हद तक बढ़ गई है कि अब इसकी लपटें आम नागरिकों को भी अपने नरगे में ले रही हैं, उनकी ज़बानें भी हफ़वात बक रही हैं, इस मौके पर मैं एक लतीफ़ा सुनाता चलूँ जो मौजूदा दौर की सही अक्कासी करता है, एक गैर–मुस्लिम के सामने ईश्वर ज़ाहिर हुए और उससे कहाः मांगो जो माँगना चाहते हो, आज तुम्हारी हर मुराद पूरी होगी लेकिन जो भी तुम मांगोगे उसका डबल तुम्हारे मुसलमान पड़ोसी को भी मिलेगा, इस नफ़रत के मारे गैर–मुस्लिम ने बहुत सोच–विचार के बाद कृष्ण से कहाः मेरी एक आँख फोड़ दो बदले में मेरे मुसलमान पड़ोसी की दोनों आँखें फोड़ दो।

नफ़रत ने आम नागरिकों को इस हद तक अंधा कर दिया कि मुल्क की मआशी हालत (आर्थिक स्थिति) क्या हो रही है, घरों में चूल्हे नहीं जल रहे हैं, मगर उनको खुशी इस बात की है कि मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैल रही है और मुसलमान परेशान हो रहा है। नौबत यहाँ तक आ गई कि अब मरकज़–ए–इस्लाम काबा को भी निशाना बनाया जा रहा है। हुजूर अकरम (स0अ0व0) की ज़ात–ए–मुकद्दस को टारगेट किया जा रहा है। इस्लामी पहचानों का मज़ाक़ किया जा रही है, जब कि इस्लामी देश जिनकी तादाद कम–ओ–बेश 57 है, उनके पास ताक़त है, फौज है, मादनी ख़ज़ाने हैं, अल्लाह की तरफ से अता कर्दा नेमतें हैं और वह ख़ुशहाली है जिससे वह किसी भी मुल्क पर असर अंदाज़ हो सकते हैं, लेकिन क्या बात है कि असर अंदाज़ होना तो दूर की बात! इस्लामी शआयर की तौहीन पर भी किसी मुल्क की तरफ से मज़म्मती बयान भी नहीं आता, इसकी वजह बेगैरती, बेहमियती, कमज़ोरी और दुनिया की बंदगी है।

कुरान मजीद ने इस सिलसिला में बड़ी रहनुमाई की है, हुजूर अकरम (स0अ0व0) की सीरत से हमको रहनुमाई मिलती है कि इन ना–मुसाइद हालात में क्या करना चाहिए, हालात कैसे बदलेंगे, डर और खौफ अमन में कैसे तब्दील होगा, मायूसी उम्मीद में कैसे बदलेगी, इर्शाद–ए–बारी हैः

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِيْنَ آمَنُوا مِـــــــــنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُم فِيْ الْأَرْضِ كَمَـــــــا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِيْ ارْتَضَـــــى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْناً يَعْبُدُونَنِيْ لَا يُشْرِكُونَ بِيْ شَيْئاً

"तुम में जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले काम किए उनसे अल्लाह का वादा है कि अल्लाह तआला उनको ज़रूर ज़मीन में हाकिम बनाएगा जैसा उसने उनके पहलों को हाकिम बनाया और उनके लिए उनके इस दीन को ज़रूर ताकत अता फरमाएगा जिसको उसने उनके लिए पसंद कर लिया है और ज़रूर उनके ख़ौफ़ को इत्मिनान से बदल देगा (बस) वह मेरी बंदगी करते रहें, मेरे साथ किसी को शरीक न करें।"

(सूरह अन्नूरः 55)

इस पर भी रहनुमाई हैः यही मुतकब्बिराना लहजा था, रासुल–मुनाफिकीन अब्दुल्लाह बिन उबई का, यही अंदाज़ था जब उसने कहा थाः

لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ

"जो इज़्ज़त वाला है वह ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा।" (अल–मुनाफ़िकूनः 8)

लेकिन हुआ क्या? वह खुद नामुराद हुआ और ज़िल्लत की वादी में गुम हो गया और जिस सरज़मीन से निकालने की बात कह रहा था वह सरज़मीन ईमान–ओ–ईकान का सरचश्मा है और उस सरज़मीन के बाशिंदों ने मोहब्बत–ओ–फिदाइयत की वह लाज़वाल दास्तान रकम की जो ता–कियामत भुलाई नहीं जा सकती।

जो मायूसी से दोचार हैं, उनकी ज़बान से मायूसी भरे अल्फाज़ ही सुनने को मिलते हैं, हालात नहीं बदलेंगे, अब कुछ नहीं होगा, मुसलमान हमेशा ऐसे ही जुल्म सहते रहेंगे, नफ़रत ऐसे ही फैलती जाएगी, आग सब कुछ जला देगी, जो खुद कुछ नहीं करना चाहते वह मायूसी फैलाने का काम बहुत अच्छे तरीके से करते हैं, जब कि कुरान–ए–करीम कहता हैः रब की रहमत से सिर्फ गुमराह लोग ही मायूस होते हैं,

इर्शाद–ए–खुदावन्दी है:

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْراً

"बस हर सख़्ती के साथ आसानी भी है।" (अल–इनशिरह: 5) कभी–कभी अल्लाह तबारक–ओ–तआला शर से खैर को वजूद अता फरमाता है, इर्शाद–ए–खुदावन्दी है:

عَسَى أَن تَكْرَبُواْ شَيْئاً وَبُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ"

हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरा समझो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो।" (अल–बकरा: 216)

हमारी नाकिस निगाहें जिसको शर समझ रही हैं मुमकिन है कि वह बड़े खैर का ज़रिया बन जाए। एक तरफ अगर मुस्लिम दुश्मनी को फ़रोग़ दिया जा रहा है तो दूसरी तरफ इस दुश्मनी की वजह जानने के लिए एक बड़ा तबक़ा इस्लाम का मुताला भी कर रहा है और उसका यह मुताला उसको खुदा से क़रीब कर रहा है, जिस शिद्दत से इस्लाम के नूर को बुझाने की साज़िश की जा रही है। उसी ताक़त से इस्लाम का नूर फैल रहा है और दिलों को रोशन कर रहा है। मायूसी के तेल से उम्मीद की शमा रोशन कर रहा है:

يُرِيْدُونَ لِيُطْفِؤُوا نُـورَ اللَّهِ بِأَفْوَابِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُـورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

"वह चाहते हैं कि अपनी फूँकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें जब कि अल्लाह अपने नूर को पूरा करके रहेगा ख़्वाह काफ़िरों को कैसा ही नागवार हो।" (अल–सफ़: 8)

बस हमको हर वक्त यह बात मल्हूज़ रखना चाहिए कि हम दाई हैं, हमको अल्लाह तआला ने पैदा किया है कि बंदों की गुलामी से निकाल कर अल्लाह की गुलामी में दाखिल करें, तारिकियों और अंधेरों से निकाल कर इस्लाम की रोशनी अता करें, हम दावत का फरीज़ा हर हाल में जारी रखें। यकीन–ओ–इत्मीनान के साथ अल्लाह के भरोसे पर और यह ऐलान–ए–खुदावन्दी याद रखें:

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُون

"ताकि वह (अल्लाह) इस (इस्लाम) को सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुशरिक जितना भी पेच–ओ–ताब खाएं।" (अल–सफ़: 9)

सतीज़ा कार रहा है अज़ल से ता इमरोज़
चिराग़–ए–मुस्तफ़वी से शरार–ए–बू लहबी

मज़हब-ए-इस्लाम का इम्तियाज़

हज़रत मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

"इस्लाम की तारीख़ का यह अजीब–ओ–ग़रीब हिस्सा है कि शजर–ए–इस्लाम लक़–ओ–दक़ सहरा में बर्ग–ओ–बार लाया और बे–आब–ओ–गियाह सरजमीन में फला–फूला। इस्लाम की लम्बी तारीख़ के मुताले से यह बात आश्कारा होती है कि इस्लाम किसी भी वक़्त, किसी भी इलाक़े में सल्तनतों और हुकूमतों की हिमायत–ओ–पुश्त–पनाही का मरहून–ए–मिन्नत नहीं रहा है। जैसा कि दूसरे मजाहिब में यह बात ख़ुसूसियत से पाई जाती है मसलनः ईसाईयत, यहूदियत और दूसरे मज़ाहिब हुकूमतों ही के साये में पले–बढ़े और ताक़त–ओ–कुव्वत, प्रोपेगेंडा और माद्दी वसाइल और दूसरों के इस्तहसाल के ज़रिया उनकी नश–ओ–नुमा हुई। जैसे ही इन ताक़तों या वसाइल को ज़वाल हुआ, उनकी दावत को भी ज़वाल हो गया।

हक़ीक़त–पसंदी, इख़्लास और गैर–जानिबदारी के साथ तारीख़–ए–इस्लाम का मुताला करने वाले के सामने यह हक़ीक़त रोज–ए–रोशन की तरह अयां हो जाती है कि इस्लाम निहायत ही नासाजगार और हिम्मत–शिकन हालात में फला–फूला। इसलिए अगर किसी मज़हब को यह दावा हो सकता है कि वह ताक़त–ओ–कूव्वत की हिमायत और किसी सल्तनत–ओ–हुकूमत की पुश्त–पनाही के बगैर बाम–ए–उरूज पर पहुँचा तो वह सिर्फ इस्लाम ही है।" (दावत–ए–इस्लामी: मसाइल, अंदेशे और तक़ाज़े: 169)

मेज़बान-ए-रसूल (स०अ०व०)

मुहम्मद मुसअब नदवी

सहाबी–ए–रसूल, मेज़बान–ए–नुबूवत, जलीलुल–क़द्र बुज़ुर्ग और रावी–ए–हदीस हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु), जिनका नाम ख़ालिद बिन ज़ैद था, मदीना के प्रतिष्ठित क़बीले बनू नज्जार से संबंध रखते थे। आपका शुमार उन पाक हस्तियों में होता है जिनके ज़िक्र से इस्लामी इतिहास महक उठता है। सीरत और तारीख़ की किताबों में आपका तज़किरा बड़ी मुहब्बत, वक़ार और सम्मान के साथ किया जाता है, और क्यों न हो, आपको वह सम्मान प्राप्त हुआ जो किसी और को न मिला।

जब मदीना की गलियाँ हिजरत–ए–नबवी (स०अ०व०) के नूर से रोशन हुईं तो हर दिल में यह तमन्ना जाग उठी कि काश! नबी–ए–रहमत (स०अ०व०) उनके घर ठहरें। काश! नबी–ए–करीम (स०अ०व०) उन्हें मेज़बानी का सम्मान प्रदान करें। हर व्यक्ति अदब के साथ निवेदन करता, मगर आप (स०अ०व०) फरमातेः "मेरी ऊँटनी का रास्ता छोड़ दो, यह अल्लाह तआला की तरफ़ से आदेशित है।"

ऊँटनी लगातार चलती रही। सबकी निगाहें उसी पर लगी हुई थीं। ऊँटनी जिस घर के सामने से गुज़र जाती वहाँ के लोग मायूस हो जाते और आगे के घरवालों को उम्मीद की किरण दिखाई देने लगती। मगर ऊँटनी अपनी चाल में चलती रही। लोग भी उसके पीछे–पीछे चल रहे थे। हर एक के दिल में यह चाहत थी कि वह उस खुशनसीब को देखे जिसके नसीब में यह दौलत आने वाली है। आख़िरकार ऊँटनी हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) के दरवाज़े पर आकर बैठ गई। मानो तक़दीर ने इसी घर को मेज़बानी के लिए चुन लिया हो। इस तरह उनका घर नूर–ए–नुबूवत से जगमगा उठा।

हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि०) की खुशी देखने लायक थी। आप अत्यंत प्रसन्न हो उठे और बड़े प्रेम व आदर के साथ रसूलुल्लाह (स०अ०व०) का स्वागत किया। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) ने अदब व सम्मान को ध्यान में रखते हुए घर की ऊपरी मंज़िल खाली कर दी ताकि रसूलुल्लाह (स०अ०व०) वहाँ ठहरें, मगर आप (स०अ०व०) ने आसानी की वजह से नीचे ठहरना पसंद फरमाया। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) ने इसे सिर आँखों पर रखा और कहाः

"जहाँ हुज़ूर रहना पसंद फरमाएँ।"

हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि०) का दिल इश्क़–ए–रसूल (स०अ०व०) से सराबोर था। आप हर समय सेवा में उपस्थित रहते और हर सांस अदब में डूबी रहती। हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि०) एक अनोखा वाक़या बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (स०अ०व०) नीचे वाले हिस्से में ठहरे हुए थे और मैं ऊपर की मंज़िल में था, तो एक ठंडी रात हमारा पानी का मटका गिरकर टूट गया और पानी छत पर बहने लगा। घबराहट में मैं और मेरी पत्नी अपने लिहाफ़ से पानी सुखाने लगे ताकि एक बूंद भी टपक कर नबी (स०अ०व०) तक न पहुँचे। उस समय हमारे पास उसी एक लिहाफ़ के अलावा कुछ न था। सुबह हुई तो मैं बारगाह–ए–रसालत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ कियाः "या रसूलल्लाह! मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान हों, मुझे अच्छा नहीं लगता कि मैं ऊपर रहूँ और आप नीचे।" फिर मैंने रात का पूरा वाक़या भी सुना दिया। इस पर आप (स०अ०व०) ने मेरी गुज़ारिश स्वीकार कर ली और ऊपर वाली मंज़िल में तशरीफ़ ले गए।

रसूलुल्लाह (स०अ०व०) लगभग सात महीने तक हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) के घर में ठहरे रहे। इस दौरान हज़रत अबू अय्यूब ने मेज़बानी में कोई कमी नहीं छोड़ी। यह सौभाग्य उनकी ज़िंदगी का सबसे उज्ज्वल अध्याय बन गया। इसके बाद भी कई ऐसे अवसर आए जब उन्हें सहाबा–ए–किराम और

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की मेज़बानी का सम्मान प्राप्त होता रहा और वह अपनी किस्मत पर गर्व करते रहे।

आप केवल मेज़बान–ए–रसूल ही नहीं थे, बल्कि मैदान–ए–जिहाद के बहादुर सिपाही भी थे। आपके बारे में मशहूर है कि आपने नबी–ए–करीम (स0अ0व0) के दौर से लेकर हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि0) के शासनकाल तक लगभग हर युद्ध में भाग लिया, सिवाय उन मौकों के जब किसी मजबूरी के कारण शामिल न हो सके हों। यहाँ तक कि जब आप वृद्धावस्था में पहुँच चुके थे तब भी उस लश्कर में शामिल हुए जिसे हज़रत मुआविया (रज़ि0) ने कुस्तुन्तुनिया की ओर रवाना किया था।

बुज़ुर्गी के बावजूद आप अल्लाह की राह में समुद्रों को पार करते हुए आगे बढ़े। रिवायत में आता है कि युद्ध के कुछ ही दिन बाद आप बीमार हो गए। सेना के सेनापति आपकी सेवा में उपस्थित हुए और कहा: "अगर कोई इच्छा हो तो फरमाइए।" आपने कहा: "मुजाहिदीन से कहना कि अबू अय्यूब की वसीयत है कि दुश्मन की सरज़मीन में आख़िरी हद तक आगे बढ़ना और मेरी लाश को भी अपने साथ आगे ले जाना तथा कुस्तुन्तुनिया की दीवार के पास दफ़न कर देना।"

यह कहकर आपने अपनी जान अपने मालिक के सुपुर्द कर दी। मुजाहिदीन ने आपकी वसीयत पर अमल किया। वे आपकी जनाज़ा लेकर आगे बढ़े और जंग जारी रखी, यहाँ तक कि आपको कुस्तुन्तुनिया की फ़सीलों के क़रीब दफ़न किया गया। मानो आपकी ज़िंदगी भी जिहाद में गुज़री और मौत भी उसी राह में नसीब हुई। अल्लाह आप पर रहमत नाज़िल फरमाए। आपने अस्सी वर्ष की आयु में भी ग़ाज़ी बनकर तेज़ रफ़्तार घोड़ों की सवारी की।

ईसार व कुर्बानी, जुह्द, तक़्वा, शुजाअत व दिलेरी, इश्क़ व मुहब्बत, ये सभी गुण आपकी शख़्सियत में इस तरह समाए हुए थे जैसे फूल में खुशबू बसी होती है। आपका घर मेहमान–ए–रसूल (स0अ0व0) का ठिकाना बना और आपकी क़ब्र आज भी इस्लामी इतिहास की शान और महानता की गवाही देती है।

(शेष: इद्दत के एहकाम) अल्लाह तआला का इरशाद है:

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ---

"और तुम में जो लोग वफ़ात पा जाएँ और वे बीवियाँ छोड़ जाएँ, तो वे बीवियाँ चार महीने दस दिन अपने आपको रोके रखें।" (अल–बक़रा: २३४) (देखिए: शामी: ३/५११)

हामिला की इद्दत–ए–वफ़ात:

शौहर के इंतिक़ाल के वक़्त बीवी अगर हामिला हो तो उसकी इद्दत भी वज़अ–ए–हमल होगी, जैसा कि मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) के बारे में गुज़र चुका है, इसलिए कि तमाम हामिला औरतों की इद्दत वज़अ–ए–हमल इरशाद फ़रमाई गई है, ख़्वाह औरत को तलाक़ की इद्दत गुज़ारनी हो या वफ़ात की। (हिंदिया: १/५२८)

ग़ैर हामिला औरत जब अय्याम से इद्दत–ए–वफ़ात गुज़ार रही हो तो वह तमाम तफ़सीलात उसमें भी होंगी जो महीनों से इद्दत गुज़ारने वाली मुतल्लक़ा के बारे में गुज़र चुकी हैं। यानी अगर महीने के पहले दिन शौहर की वफ़ात हुई तो महीनों का शुमार किया जाएगा, चाहे वे २९ दिन के हों या ३० दिन के और दरमियान में वफ़ात हुई हो तो दिनों के एतिबार से १३० दिन इद्दत गुज़ारेगी। (हिंदिया: १/५२७)

और जब हामिला हो तो अगर इंतिक़ाल के चंद लम्हों बाद भी वज़अ–ए–हमल हो जाए तो इद्दत मुकम्मल मानी जाएगी। हिदाया में हज़रत उमर (रज़ि0) का क़ौल नक़ल किया गया है कि अगर शौहर की लाश चारपाई पर हो और वज़अ–ए–हमल हो जाए तो औरत की इद्दत गुज़र जाएगी और उसके लिए दूसरे शौहर से शादी करना हलाल हो जाएगा। (हिदाया मअ–अल–फ़तह: ४/३१४)

जिस औरत को तलाक़–ए–सुन्नत दी गई, उसकी इद्दत कब से शुरू होगी?

जिस औरत को तलाक़–ए–सुन्नत दी जाए यानी तीन अलग–अलग तुहरों में, या अगर उसको हैज़ नहीं आता तो तीन अलग–अलग महीनों में तलाक़ दी गई, तो उसकी इद्दत हैज़ या महीनों से होने की सूरत में पहली तलाक़ ही से शुरू हो जाएगी। (शामी: ३/५२०)

सोशल मीडिया और व्यवहारिक चैलेंज

मुहम्मद अरमग़ान बदायूनी नदवी

इसमें कोई शक नहीं कि आज के दौर में आधुनिक साधनों और तकनीक का उपयोग हर इंसान की जरूरत बन चुका है। इनमें सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स की बहुत बड़ी भूमिका है। इन्होंने पूरी दुनिया को एक "ग्लोबल विलेज" बना दिया है। अगर दुनिया के किसी भी कोने में कोई छोटी–सी घटना होती है, तो सोशल मीडिया के माध्यम से उसकी खबर तुरंत पूरी दुनिया में फैल जाती है और आम लोग भी उस पर अपनी राय देने लगते हैं। कई बार सोशल मीडिया पर चलने वाला कोई ट्रेंड पूरी दुनिया में हलचल मचा देता है और हर वर्ग उससे प्रभावित होता है।

मुफक्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रहमतुल्लाह अलैह) ने बहुत सुंदर बात कही थी कि:

"पहले क्रांति बहुत धीरे–धीरे आती थी, क्योंकि उस समय यात्रा और संचार के साधन भी धीमे थे। फिर रेल आई, उसके बाद हवाई जहाज़ आए और अब रेडियो, टीवी तथा आधुनिक माध्यमों के जरिए बदलाव पलक झपकते ही घर–घर पहुंच जाता है।"

वास्तव में सोशल मीडिया की तेज़ गति पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। निस्संदेह सोशल मीडिया के कई लाभ हैं। यह दुनिया भर की खबरों और हालात से तुरंत जानकारी प्राप्त करने का एक बेहतरीन माध्यम है। इसकी सहायता से लोग दूर रहकर भी अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से जुड़े रहते हैं। पहले जो जानकारी लोगों तक महीनों या वर्षों में पहुंचती थी, आज वह कुछ ही क्षणों में फैल जाती है। ऑनलाइन व्यापार और मार्केटिंग के जरिए बहुत से लोगों को रोजगार मिला है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से लोग कम खर्च में आसानी से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसी प्रकार विभिन्न विषयों की आवश्यक जानकारी भी आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

यदि सोशल मीडिया का उपयोग दावत व सुधार, अच्छे संदेशों के प्रचार, कुरआन–हदीस की शिक्षा और मानवता की भलाई के लिए किया जाए, तो यह एक बहुत उपयोगी और रचनात्मक माध्यम बन सकता है।

लेकिन इन फायदों के बावजूद इसके नुकसान भी बहुत अधिक हैं। आज नई पीढ़ी बेकार मनोरंजन, समय की बर्बादी और उद्देश्यहीन जीवन में फंसती जा रही है, जिसकी एक बड़ी वजह सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग और उसकी लत है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो इसका सही और लाभदायक उपयोग करते हैं, जबकि अधिकांश लोग अपना समय, स्वास्थ्य, पैसा और प्रतिभा व्यर्थ चीजों में बर्बाद कर रहे हैं।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है:

"और लोगों में कुछ अल्लाह से ग़ाफ़िल करने वाली बातों के ख़रीद दार बनते हैं ताकि बे जाने बूझे अल्लाह के रास्ते से हटा दें और उसका मज़ाक़ बनाएं, ऐसे ही लोगों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है।"

(सूरह लुक़मानः 06)

हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते थे कि "लहवुल हदीस" में वे सभी आधुनिक साधन शामिल हैं जिनका उपयोग केवल मनोरंजन और समय बर्बाद करने के लिए किया जाता

है, जैसे रेडियो और टीवी। आज सोशल मीडिया उसी की आधुनिक रूपरेखा है। यह इंसान को अल्लाह की याद, इबादत, जिम्मेदारियों और अच्छे चरित्र से दूर करता है। इसके माध्यम से अश्लीलता, बेहयाई और गलत विचार बहुत तेजी से फैल रहे हैं। पहले इंसान किसी गलत सोच से तभी प्रभावित होता था जब वह किसी गुमराह व्यक्ति से मिलता या उसकी बातें सुनता, लेकिन आज मोबाइल के एक क्लिक से इंसान गलत रास्ते पर पहुंच जाता है। बंद कमरे में बैठे–बैठे अश्लील चीजें देखना और बुराइयों में पड़ना बहुत आसान हो गया है। दुख की बात यह है कि लोग अपनी सेहत, समय और जीवन इन चीजों में बर्बाद कर रहे हैं।

यह भी सच है कि सोशल मीडिया ने दुनिया की दूरियां कम की हैं, लेकिन लोगों के दिलों में दूरियां बढ़ा दी हैं। यह जहां जानकारी का माध्यम है, वहीं झूठी खबरों और अफवाहों को फैलाने का भी एक शक्तिशाली साधन बन चुका है। बिना जांच–पड़ताल के खबरें वायरल कर दी जाती हैं, जिससे कई बार किसी व्यक्ति, समाज या धर्म को नुकसान पहुंचता है और समाज में नफरत बढ़ती है।

अगर देखा जाए तो दूसरों की चरित्र–हत्या (किरदार–कुशी) का भी यह एक बहुत बड़ा प्लेटफ़ॉर्म बन गया है। आदमी बड़ी आसानी से बंद कमरे में माइक ऑन करके दूसरों की इज़्ज़त उछालता है, उनका मज़ाक उड़ाता है, उनकी बुराइयाँ ढूँढ़ता है और लोगों के दिमाग़ों को ज़हरीला बनाता है।

ख़ास तौर पर इसका सबसे शर्मनाक पहलू फ़हाशी (अश्लीलता) और बेहयाई का प्रसार है। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रहमतुल्लाह अलैह कहा करते थे कि हमारे समाज में विनाशकारी शक्तियाँ जिस तरह नैतिक अराजकता और विद्रोह फैला रही हैं, उनके पास ऐसे साधन हैं जो रात को दिन और दिन को रात साबित कर सकते हैं, नूर को अंधकार और अंधकार को नूर बना सकते हैं। सच तो यह है कि आज सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से यही काम जारी है।

अगर गहराई से देखा जाए तो सोशल मीडिया कृत्रिम (बनावटी) जीवन की सबसे अच्छी तस्वीर है। एडिटिंग के माध्यम से दर्शकों के सामने ऐसे दृश्य प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता। लेकिन देखने वालों का मन और मस्तिष्क उससे प्रभावित होता है, और उसके परिणामस्वरूप वे हीन भावना (अहसास–ए–कमतरी) या बेचैनी का शिकार हो जाते हैं। इसके अलावा समय की बर्बादी सबसे बड़ी चुनौती है। जो समय आदमी इबादत, साधना और मानवता की सेवा में लगा सकता था, आज वही सारा समय सोशल मीडिया की भेंट चढ़ चुका है।

वास्तविकता यह है कि इस समय सोशल मीडिया ने नई पीढ़ी के जीवन को बिगाड़ दिया है, उनके चरित्र को खराब कर दिया है और उनके ऊँचे उद्देश्यों को नष्ट कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप सामूहिक रूप से एक ऐसा भ्रष्ट वातावरण पैदा हो चुका है, जो राष्ट्रों के अंधकारमय भविष्य का निर्णय कर रहा है। आज स्थिति यह है कि जो लोग इन माध्यमों का जितना अधिक उपयोग करना जानते हैं, उनका प्रभाव उतना ही अधिक बढ़ता जा रहा है। ज़रूरत इस बात की है कि नई पीढ़ी के हाथों से इस नासूर को दूर किया जाए, या कम से कम उन्हें इसके सदुपयोग और अच्छे उद्देश्यों की ओर प्रेरित किया जाए, और इसके लिए हर संभव प्रयास किया जाए।

मलफ़ूज़ात–दाई–ए–इस्लाम

शजर–ए–इस्लाम की समर–रेजी और इंसानी बक़ा का राज़:

फ़रमाया: "इंसान की बक़ा और इस्तहकाम 'इस्लाम–ओ–ईमान' से वाबस्ता है और शजर–ए–इस्लाम की समर–रेजी (फल देना) नीचे दिये गए कामों से वाबस्ता है: तौहीद–ओ–सुन्नत, इख़्लास, जुल्म से इजतिनाब, रिज़्क़–ए–हलाल, रिश्तों–नातों का ख़्याल और सच्ची मोहब्बत।"

कमाल–ए–इंसानी और एक इश्काल का जवाब: फ़रमाया: "क़ुरआन मजीद में हमें यह दुआ सिखाई गई है: "ऐ हमारे रब! हमारी बीवियों और हमारी औलाद से हमको आँखों की ठंडक अता फरमा।" इससे मालूम हुआ कि आँख से असरात लिए जा सकते हैं और दूसरे पर डाले भी जा सकते हैं। इसलिए अच्छे से अच्छा और बुरे से बुरा हज–ए–शैतानी इंसानी कमालात के मुनाफ़ी है। हर इंसान जब पैदा होता है तो शैतान उसको कचोके लगाता है और जब शैतान कचोके लगाता है तो इंसानी कमाल में ज़वाल आता है। लेकिन अल्लाह के रसूल (स०अ०व०) को इंसानियत के लिए कामिल–ओ–अकमल बनाना मक़सूद था। इसलिए हुज़ूर (स०अ०व०) का शक़–ए–सद्र (सीना चाक करना) हुआ। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि हुज़ूर (स०अ०व०) की पैदाइश औसाफ़–ए–जमीला और अख़्लाक़–ए–कामिला के साथ हुई थी। जैसा कि आता है कि: "गोया आप जैसे चाहते थे वैसे ही पैदा किए गए।"

तो फिर शक़–ए–सद्र की जरूरत क्यों पेश आई? दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि अगर आपका शक़–ए–सद्र हो गया और आप हमेशा के लिए शैतानी असरात से महफ़ूज़ हो गए तो इसका लाज़मी नतीजा यह होना चाहिए कि आपके अंदर से इंसानी ख़्वाहिशात भी ख़त्म हो गईं, लेकिन इस सूरत में "इंसानी कमाल" बाक़ी नहीं रहेगा। इसका जवाब यह है कि बिला–शुब्हा हुजूर (स०अ०व०) बा–कमाल–ओ–बा–जमाल पैदा हुए थे और इसमें ज़र्रा बराबर किसी शक–ओ–शुब्हा की गुंजाइश नहीं है। लेकिन इस कमाल का मतलब यह नहीं है कि इसके अंदर औसाफ–ए–इंसानी न हों बल्कि वाक़्या यह है कि जो जितना ज़्यादा कामिल तरीन इंसान होगा, उतना ही ज़्यादा उसके अंदर इंसानी फ़ितरतें, तबियतें और ख़्वाहिशात भी कामिल–ओ–अकमल दर्जे की होंगी।

हुज़ूर (स०अ०व०) हर लिहाज से अकमल तरीन इंसान थे। आपको सरवर–ए–कायनात, ख़ातिमुन–नबिय्यीन, शफ़ी–उल–मुजनिबीन, हबीब–ए–खुदा, सैय्यद–ए–कौनैन बनना था, इसलिए अल्लाह तआला ने शक–ए–सद्र से आपके अंदर के उस माद्दा को ख़ारिज कर के साफ़ कर दिया जिसके रहने से शैतान कचोके लगा सकता है और शक़–ए–सद्र हो जाने के बाद यह न समझा जाए कि इंसानी ख़्वाहिश ख़त्म हो गई बल्कि इसके ज़रिया उन असरात का इजाला (ख़ात्मा) मक़सूद था जिनकी बुनियाद पर ज़हन में गलत तसव्वुर आए। हक़ीक़त में शक़–ए–सद्र के जरिया इसी का ख़ात्मा हुआ और ज़ाहिर है कि इंसान जब हर बुराई से, गलत ख़्यालात और बुरे तसव्वुरात से महफ़ूज़ रहेगा तो उसके अंदर इंसानी ख़्वाहिशें भी अकमल दर्जे में मौजूद रहेंगी और वह कामिल तरीन होगा।"

ज़ब्त–ओ–पेशकश: मुहम्मद अज़ीमुद्दीन नदवी

हज़रत मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 05 ❁ May 2026 ❁ Volume: 18

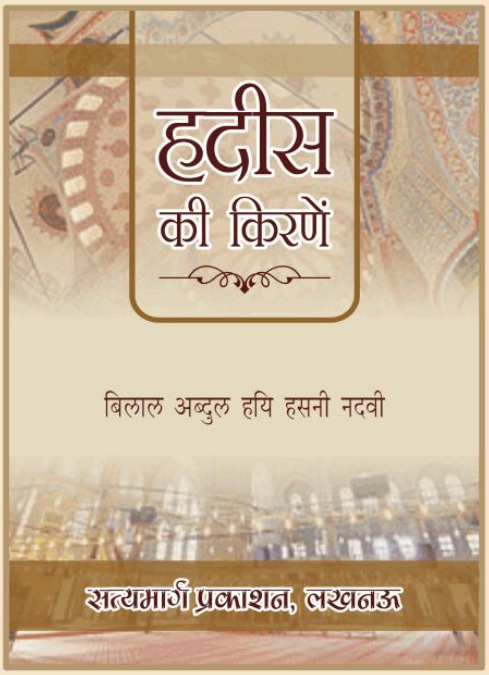

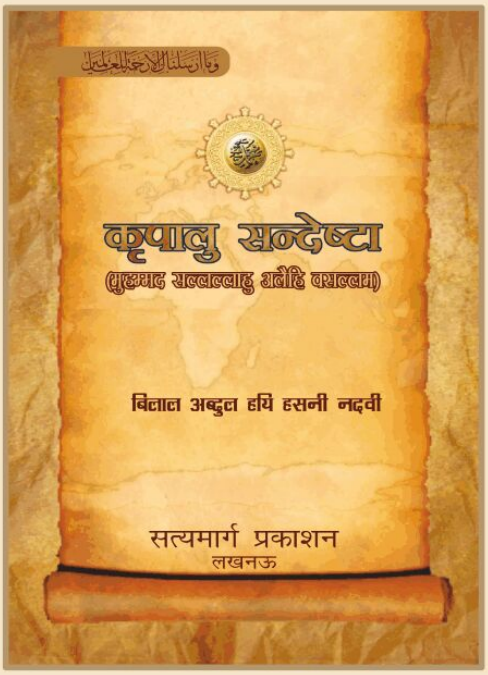

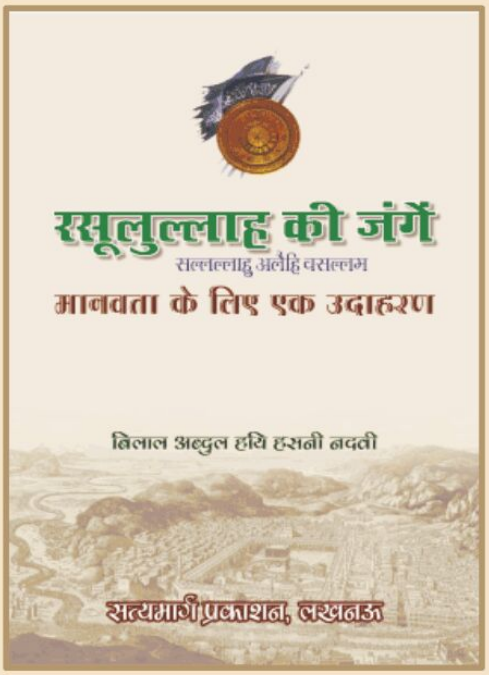

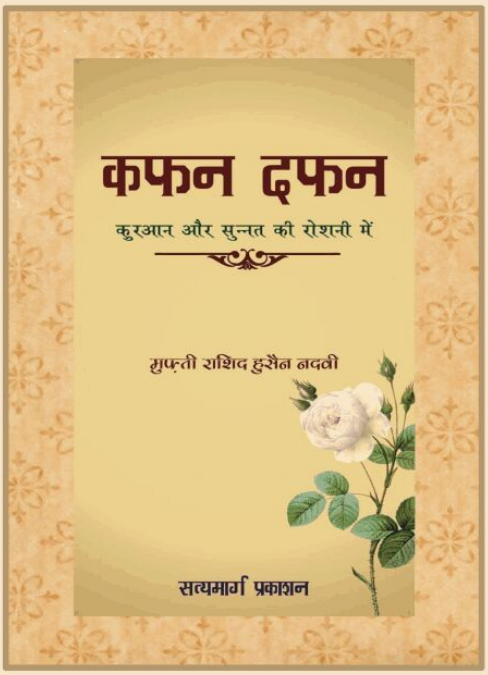

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.